चन्दामामा
मार्च १९७९

DADDY
MUMMY
AND...
I
"ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं।"
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग... जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना. अपने बच्चों की गुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए... उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए. ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
EKCO
SKETCH PEN
FOR SKETCHING COLOURING • SIGNING
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/८, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फोन : ३२४४३२
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.
ADVERTS/WP/216/HIN/38

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ।
2
4
7
64
24
6
2
96
80
20
48
4
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : 13-4-1979
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेज़ी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो :
"Fun with Gems", Dept. No. A-8
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra.
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1.	*Place of Publication*	...	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 2 & 3, Arcot Road Vadapalani, Madras-600 026
2.	*Periodicity of Publication*	...	MONTHLY 1st of each calendar month
3.	*Printer's Name*	...	B. V. REDDI
	Nationality	...	INDIAN
	Address	...	Prasad Process Pvt Limited 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
4.	*Publisher's Name*	...	B. VISWANATHA REDDI
	Nationality	...	INDIAN
	Address	...	Chandamama Publications 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
5.	*Editor's Name*	...	NAGI REDDI
	Nationality	...	INDIAN
	Address	...	'Chandamama Buildings' 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
6.	*Name & Address of individuals who own the paper*	...	CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND Beneficieries:

1. B. V. HARISH
2. B. V. NARESH
3. B. V. L, ARATI
4. B. L. NIRUPAMA
5. B. V. SANJAY
6. B. V. SHARATH
7. B. L. SUNANDA
8. B. N. RAJESH
9. B. ARCHANA
10. B. N. V. VISHNU PRASAD
11. B. L. ARADHANA
12. B. NAGI REDDI

All Minors—by Trustee:
M. UTTAMA REDDI, 9/3, V.O.C. Street, Madras-600 024

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

1st *March* 1979

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "गात्र परीक्षा" है। यह कहानी यह साबित करती है कि मानवों में वास्तविक अभिरुचि के लुप्त होने पर लोग कलाओं का मूल्यांकन करने के लिए कृत्रिम मार्गों का अवलंबन कैसे करते हैं और किस प्रकार उन मार्गों के कारण वे एक दम असफल हो जाते हैं।

अमर वाणी

शीलं, शौचं, शांति, दाक्षिण्यं,
मधुरता, कुले जन्म
न विराजंति हि सर्वे
वित्त विहीनस्य पुरुषस्य ।।

[शील, शौच, क्षमा, दया, मधुर प्रकृति, उत्तम वंश—ये सब गुण निर्धन व्यक्ति में शोभा नहीं देते ।]

वर्ष : ३१ मार्च १९७९ अंक : ७

एक प्रति : १-२५ : : वार्षिक चन्दा : १५-००

के. पद्मनाभ भट, कार्कल (द. कर्नाटक)

प्रश्न : भूकंपों का एक ही स्थान पर होने का कारण क्या है?

उत्तर : भूगर्भ में असंख्य "दरारें" हैं। भूगर्भ की उष्णता की वजह से शिलाएँ गल जाती हैं और दरारों से होकर बहती हैं। कभी कभी अग्नि पर्वत के फटने से एक टापू अथवा टापू के थोड़े हिस्सों के सर्वनाश होने की संभावना होती है। या फटने के परिणाम से ऊपर आये शिलाद्रव के साथ एक नया टापू भी उत्पन्न हो सकता है। अतः कल्पना कर सकते हैं कि ऐसी घटनाओं के पीछे कैसी जबर्दस्त ताक़त होती है। उस ताक़त की वजह से दरारों के फैलने व ऊबड़-खाबड़ होने से भूकंप हो जाते हैं। ऐसे दरारोंवाले प्रदेशों में ही अकसर भूकंप के परिणाम दिखाई देते हैं। वास्तव में पृथ्वी में जब कंपन होता है, तब सारे संसार में उस भूकंपन का पता चल जाता है। अगर जापान के किसी भाग में भूकंप होता है तो कई हजार मीलों की दूरी पर स्थित यंत्र उसका पता लगा लेते हैं।

जी. एस. रमणरेड्डी, पल्ललकुप्पम (तमिलनाडु)

प्रश्न : बस जब चलती रहती है, तब बत्ती के चतुर्दिक कीड़े चक्कर काटते रहते हैं, पर बस के साथ वे कीड़े कैसे सफ़र करते हैं?

उत्तर : बस की गति या बस के साथ स्थित हवा की गति जब कीड़ों को प्राप्त होती है, तब कीड़ों को बस के साथ यात्रा करने के लिए किसी भी प्रकार का प्रयत्न करने की जरूरत नहीं होती। कोई भी मानव बैठकर फी घंटे कई सौ मील की गति के साथ हिल नहीं सकता। मगर मानव हवाई जहाजों में उस गति के साथ यात्रा कर रहे हैं न? सच बताना हो तो पृथ्वी पर की प्रत्येक वस्तु भूभ्रमण के साथ फी घंटे एक हजार मील गति के साथ हिल रही है—यहाँ तक पत्थर व पेड़ों के साथ।

एलेश्वरपु वेंकटश्रीकृष्ण, मंगलगिरि (आन्ध्र)

प्रश्न : मुनि व तपस्वी बघ चर्म व हिरण के चमड़ों पर क्यों बैठते हैं?

उत्तर : मुनि व तपस्वी जंगलों में आश्रम बनाकर पालतू जानवरों को खाया करते थे। आश्रमों में धागे, बुनाई व चटाई के उद्योग नहीं होते थे। अतः वे जिन मृगों को मार डालते थे, उनके चमड़ों को चटाइयों के रूप में काम में लाते थे। एक जमाने में वे लोग चमड़ों को ही वस्त्रों के रूप में इस्तेमाल करते थे। शिवजी हाथी के चमड़े को अपने वस्त्र के रूप में काम में लाते थे।

[६८]

प्रणय कलहों की कथा

नंद एक विशाल साम्राज्य के चक्रवर्ती थे। उनका मंत्री वररुचि समस्त शास्त्रों में पारंगत एक महान मेधावी था।

एक दिन शाम को वररुचि और उसकी पत्नी के बीच प्रणय-कलह प्रारंभ हुआ। वह अपनी पत्नी को हद से ज़्यादा प्यार करता था। इसलिए अपनी पत्नी के साथ समझौता करने के लिए उसने मिन्नत की। पर कोई फल न निकला। इस पर उसने अपनी पत्नी से निवेदन किया–"प्रिये, बताओ, मेरे किस कार्य से तुम्हारा क्रोध शांत हो जाएगा? मैं वैसा ही करूँगा।"

बड़ी देर तक मिन्नत करने के बाद वररुचि की पत्नी ने कहा–"तुम अपना सिर मुडवाकर मेरे पैरों में गिर जाओगे तो मैं पूर्ववत तुम्हारे साथ प्यार करूँगी।"

वररुचि ने अपनी पत्नी की इच्छा की पूर्ति करके उसके क्रोध को शांत किया।

उसी दिन शाम को नंद और उनकी पत्नी के बीच प्रणय-कलह उत्पन्न हुआ। अपनी पत्नी के क्रोध को शांत करने के लिए नंद ने अनेक प्रयत्न किये। पर कोई फ़ायदा न रहा।

इस पर नंद ने विनती की–"प्रिये! मैं तुम्हारे बिना एक घंटा भी जीवित नहीं रह सकता। मैं तुम्हारे चरण छू लेता हूँ। मुझ पर कृपा करो।"

इसके उत्तर में नंद की पत्नी ने कहा–"आप घोड़े की लगाम को अपने मुँह में दबाये मुझे अपनी पीठ पर सवार होने दीजिए, तब घोड़े की भांति हिनहिनाते मुझे सवार करने दे तो मैं संतुष्ट हो जाऊँगी।" नंद ने ऐसा ही किया।

दूसरे दिन मंत्री वररुचि दरबार में आया। तब उसके सिर मुडवाने का कारण गुप्तचरों के द्वारा पहले ही पता लगाने की वजह से नंद ने उसकी अवहेलना करने के विचार से पूछा–"वररुचि! तुमने शुभ दिन का भी ख्याल किये बिना अपना सिर क्यों मुडवा लिया है?"

वररुचि को भी नंद की करनी का पता चल गया था, इसलिए उसने कहा–"प्रभु! क्या आप नहीं जानते? यदि हमें अपने कार्य संपन्न करने हैं तो हमें ऐसे कई प्रकार के काम करने पड़ते हैं? अगर कोई काम करना नहीं है तो कुछ भी नहीं होता! बस, यही है न?"

इस पर नंद मौन रह गये। बन्दर ने मगर मच्छ को यह कहानी सुनाकर कहा–"मूर्ख! उन लोगों ने अपनी पत्नियों को संतुष्ट करने के लिए ये काम किये। पर इन कामों के जरिये दूसरों की कोई हानि नहीं हुई है। मगर तुम अपने मित्र को मारने के लिए तैयार हो गये, रेंकने से एक गधे की मौत हो गई थी! क्या तुमने यह कहानी नहीं सुनी?"

मगर मच्छ ने पूछा, वह कैसी कहानी है? इस पर बंदर ने यों सुनाया :

बघचर्म ओढ़नेवाले गधे की कहानी

एक गाँव में एक धोबी रहा करता था। उसके पास एक गधा था। वह घास के अभाव में कमज़ोर हो गया था।

एक दिन धोबी ने जंगल में घूमते हुए एक मृत बाघ को देख यों सोचा–"मैं अपने इस गधे पर बाघ का चमड़ा ओढ़ाकर रात के वक़्त खेतों में छोड़ दूँ तो किसान उसे सचमुच बाघ समझकर डर के मारे भाग जायेंगे। तब भर पेट फ़सल चरकर मेरा गधा मोटा-ताजा बन जाएगा और मेरे कपड़ों के भारी गट्ठर ढो सकेगा।"

यों विचार कर उसने बघचर्म गधे पर ढककर अपनी योजना को चालू किया।

किसानों ने गधे को देख सचमुच बाघ समझा और उसे अपने खेतों से भगाने में

डर गये। गधा रात भर चरता और सवेरे घर लौट आता था। इस प्रकार फ़सल खाकर वह मोटा-ताजा बन गया।

एक दिन रात को वह गधा खेत में फ़सल चर रहा था, तब दूर पर एक मादा गधे को रेंकते सुनकर वह भी उत्साह में आ गया और रेंकने लगा। इस पर किसानों ने पता लगाया कि वह बघचर्म ओढ़ा हुआ गधा है। तब उसे पकड़कर पीट-पीटकर बेदम कर दिया।

बंदर गधे की यह कहानी समाप्त करने ही जा रहा था, तभी एक जल जंतु आकर मगर मच्छ से बोला—"अबे, कराळमुख! बिना खाये-पिये तुम्हारी राह देखनेवाली तुम्हारी पत्नी ने निराशा और ईर्ष्या में आकर आत्म हत्या कर ली है!"

ये बातें सुन मगर मच्छ ने सोचा—"ओह! मैं कैसा अभागा हूँ! मेरा घर तो अब तबाह हो गया। उत्तम व्यक्ति के लिए पत्नी ही घर होती है। बिना पत्नीवाला घर बंजर भूमि के समान है। पत्नी हो तो पेड़ व गुफा में भी आनंद के साथ दिन बिता सकते हैं! पत्नी विहीन राज महल भी रेगिस्तान के समान है।" यों विचार कर बंदर से बोला—"दोस्त, मैंने तुम्हारे प्रति जो मित्र-द्रोह करना चाहा, इसके वास्ते मुझे क्षमा कर दो। मैं अभी जाकर अपनी

पत्नी की चिता पर अपने प्राण त्याग देता हूँ। मुझे विदा कर दो।"

इस पर बंदर ने कहा—"मैं पहले से ही जानता था कि तुम अपनी पत्नी के गुलाम हो और उसने तुम्हें अपने हाथ का खिलौना बना रखा है। अब इस बात को तुमने सच्चा साबित कराया है। मूर्ख! इस कारण तुम्हें खुश होना चाहिए; उल्टे रोते क्यों हो? ऐसी पत्नियों के मरने पर उत्सव मनाना चाहिए। ऐसी नारियों को हमें डाँटना है, उन्हें पुरस्कार देकर हम उन्हें सही रास्ते पर नहीं ला सकते। ऐसी औरत के वास्ते तुम आत्म हत्या कर लोगे! नहीं, यह भूल मत करो!"

"दोस्त! तुम्हारा कहना कुछ हद तक सही है। लेकिन मैं क्या करूँ? अपनी पत्नी को खो चुका हूँ। मेरा घर उजड़ गया है। तुम्हारी दोस्ती से भी वंचित हो गया हूँ। एक किसान की पत्नी के जैसे मैं भी न घर का रहा और न घाट का ही।" मगर मच्छ ने समझाया।

"वह कैसी कहानी है?" बंदर के पूछने पर मगर मच्छ ने यों सुनाया:

किसान की पत्नी की कहानी

पुराने ज़माने में एक किसान दूर के अपने खेत में अपनी सुंदर पत्नी के साथ गृहस्थी चलाया करता था। उन्हें कोई संतान न थी। किसान अधेढ़ उम्र का था। उसकी पत्नी जवान थी। इस वास्ते वह एक युवक प्रियतम का इंतजार करने लगी।

उस युवती पर आँख गढ़ा कर रहने वाले एक दुष्ट ने उस के मन की बात भाँप ली और एक दिन उससे मिलकर कहा—"हे सुंदरी! मैंने जिस क्षण तुमको देखा तभी मैंने तुम्हें अपना हृदय दे दिया है। हाल ही में मेरी पत्नी का भी देहांत हो गया है। मेरे अपना कहनेवाला कोई नहीं है। मैं अकेला प्राणी हूँ। इसलिए तुम मुझे स्वीकार कर सुखी बनाओ।"

इस पर वह युवती खुश होकर बोली—"अगर तुम मुझ से प्यार करते हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। हम दोनों यहाँ से भाग जायेंगे। मेरे पति ने अपनी पेटी में काफ़ी धन छिपा रखा है। मैं वह सारा धन लेते आऊँगी। उस धन से हम दोनों सुखपूर्वक अपने दिन बिता सकते हैं।"

"अच्छी बात है। तुम्हारे पति के सो जाने के बाद तुम आज रात को ही वह धन लेकर मेरे पास चली आ जाओ।" उस दुष्ट ने समझाया। इस पर उस युवती ने उसकी बात मान ली।

उस दिन रात को जब उस युवती का पति सो रहा था, तब सारा धन लेकर वह अपने दुष्ट प्रेमी के पास पहुँची। वह दुष्ट बड़ा खुश हुआ और उस युवती के साथ नाचते-गाते चल पड़ा।

भल्लूक मांत्रिक

[८]

[राजा दुर्मुख अपना पीछा करनेवाले भल्लूक मांत्रिक से बचने के लिए भाग खड़ा हुआ। पर राक्षस उग्रदण्ड को देखते ही डर के मारे बेहोश हो गया। उसने अंग रक्षक को नाले से पानी लाने का आदेश दिया। नाले के पास सूंड कटा हाथी उसे देख उकसा गया और चींकार करते उसका पीछा करने लगा। बाद...]

राक्षस उग्रदंड ने अपने निकट आनेवाले हाथी की ओर नज़र दौड़ाकर बधिक भल्लूक से कहा–"सुनो, यह सूंड कटा हाथी क्या तुम्हारा वाहन है? इसका रवैया देखने पर लगता है कि यह तो जंगली हाथी है।"

"जी हाँ! यह तो जंगली हाथी है। जंगल में इसने मेरा रास्ता रोकना चाहा, तब मैंने उसकी सूंड पर अपने परसु का प्रहार किया और उस पर सवार हो उसके कान मरोड़ते हुए यहाँ पर ले आया।" बधिक भल्लूक ने उत्तर दिया।

इतने में हाथी उनके समीप आ पहुँचा। इसे देख लुटेरा नागमल्ल और उसके दो साथी गुफा की ओर दौड़ पड़े। बेहोश राजा दुर्मुख हठात् उठ खड़ा हुआ और तीर की भांति पेड़ों की ओट में भाग गया। अंग रक्षक चीख़कर उग्रदण्ड के

तभी उग्रदण्ड उसके ऊपर छलांग मारकर उस पर बैठ गया, उसके एक कान को मरोड़कर पकड़ लिया, तब अपने गदे से उसकी बगल में प्रहार किया। चोट खाकर हाथी ने बधिक भल्लूक को नीचे खिसका दिया और धम्म से नीचे गिर पड़ा। उस वक़्त उग्रदण्ड ने बिजली की गति से जाकर उसके अगले दोनों पैरों को कस लिया, ऊपर उठाते बोला—"अरे अंग रक्षक! तुम जल्दी जाकर जंगली बेलों को तोड़ लाओ, इसके पैर बांध देने हैं।"

अंग रक्षक उग्रदण्ड का आदेश पाकर झाड़ियों की ओर दौड़ पड़ा। बधिक भल्लूक बेहोश हुए व्यक्ति की भांति आँख खोलते व बंद करते हुए बायें हाथ से अपना सिर पकड़कर बोला—"राक्षस उग्रदण्ड? मेरे जादू के परसु से भी तुम्हारा देह-बल ज्यादा ताक़तवर मालूम होता है। तुमने मुझे बचाया, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। माँगो, तुम क्या चाहते हो?"

उग्रदण्ड ने बधिक भल्लूक की ओर मंदहासपूर्ण दृष्टि दौड़ाकर कहा—"मुझे अगर कुछ माँगना हो तो वह तुम्हारे गुरु भल्लूक मांत्रिक से ही कुछ माँगना है। फिलहाल यह बिगड़ा हुआ हाथी कुछ हरकत न कर बैठे। तुम इसके पैर कसकर पकड़ लो।"

पीछे जा खड़ा हुआ। उग्रदण्ड अपना पत्थरवाला गदा उठाकर बोला—"अबे, तुमने थोड़ी देर पहले कहा था कि तुम मेरे अंग रक्षक हो! अब लगता है कि मैं ही तुम्हारा अंग रक्षक हूँ! कमबख़्त कायर कहीं का!" यों कहकर अपनी ओर बढ़नेवाले हाथी के रास्ते से हट गया।

बधिक भल्लूक अपना परसु घुमाते हाथी के सामने जाकर बोला—"ठहरो, क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना? मैं बधिक भल्लूक हूँ और तुम मेरे वाहन हो।"

बधिक भल्लूक की बात पूरी भी न हो पाई थी कि हाथी ने उसे अपनी सूंड में लपेटकर उठाया और दूर फेंकने को हुआ,

बधिक भल्लूक ने उग्रदण्ड की ओर तीव्र दृष्टि दौड़ाकर कहा–"मैं अपने इस कमबख्त वाहन के पैर पकड़ लूँ? इससे बढ़कर कोई अपमान की बात हो सकती है? लो, अभी मैं अपने जादू के परसु से इसका सर सौ टुकड़े कराने जा रहा हूँ।" यों कहते उसने अपना परसु उठाया।

"अबे, रुक जाओ! तुमने आज तक बधिक की ज़िंदगी बिताई! ढींग मारने की ये बातें कहाँ सीखीं? अगर तुम इस हाथी को मार डालोगे तो तुम अपना काम पूरा कर अपने मालिक भल्लूक मांत्रिक के पास कैसे जा सकोगे?" उग्रदण्ड ने पूछा।

उग्रदण्ड ने बधिक को जब उसके काम की याद दिलाई, तब वह उछलकर कूद पड़ा और बोला–"हाँ, भूल गया था! पर वह दुष्ट राजा दुर्मुख कहाँ? अभी तक वह बेहोश हो यहीं गिरा हुआ था?" इन शब्दों के साथ बधिक ने चारों ओर अपनी नज़र दौड़ाई।

नीचे गिरा हुआ हाथी उग्रदण्ड की पकड़ में से बचने के लिए चींकार करते हंगामा मचाने लगा। पर उग्रदण्ड अपनी पकड़ को ढीला किये बिना ही हुंकार करके बोला–"अरे अंग रक्षक! तुम कहाँ मर गये हो? बेल तोड़ लाने में इतनी देर क्यों करते हो?"

"उग्रदण्ड साहब! मैं अभी आया!" यों कहते डाकू नागमल्ल और उसके दो अनुचर एक लंबा रस्सा लिये वहाँ पहुँचे।

भल्लूक के हाथों से तुम तीनों के सर कटवा दूं?" उग्रदण्ड ने कहा ।

ये बातें सुन नागमल्ल आपाद मस्तक कांप उठा । वह कुछ कहने को हुआ, तभी बधिक भल्लूक "सिरस भैरव!" चिल्लाते परसु उठाकर गरज उठा–"अबे! राहगीरों को लूटनेवाले दुष्टो! राजा दुर्मुख कहाँ? इसी क्षण न बताओगे तो तुम्हारे सर काट डालूंगा ।"

लुटेरा नागमल्ल कांपकर बोला–"भल्लूक साहब! मुझे मत मारो! अपने को दुर्जय गुप्त बताकर झूठ बोलनेवाला राजा दुर्मुख बेहोश हो इसी प्रदेश में कहीं पड़ा हुआ है न?"

"मैं भी यही पूछ रहा हूं! वह इस वक्त कहाँ पर है? यदि मैं उसका सर लेता हुआ न जाऊँ तो भल्लूक मांत्रिक मेरा सर काट डालेंगे ।" बधिक भल्लूक ने रोनी सूरत बनाकर कहा ।

इस बीच नागमल्ल के दोनों अनुचरों ने हाथी के अगले पैरों को रस्सों से कसकर बांध डाला । वह अपने पिछले पैरों को झाड़ते हुए उठने को हैरान होने लगा । उसी समय अंग रक्षक लंबे जंगली बेलों को कंधे पर उठाये आ पहुँचा ।

राक्षस उग्रदण्ड ने नागमल्ल के अनुचरों को आदेश दिया कि उन जंगली बेलों से

उग्रदण्ड ने उन्हें आदेश दिया कि रस्से से हाथी के पैर बांध दे, तब बोला–"वाह, तुम लोग सच्चे चोर हो! कब किस चीज की ज़रूरत होती है, उसे तुम लोग पहले से ही सावधानी से अपने पास रखते हो?"

नागमल्ल ने हाथी के पैरों को बांधने का काम अपने अनुचरों को सौंप दिया, तब बोला–"उग्रदण्डजी! हम तो जंगली जीव हैं! आप जब यहाँ से जायेंगे तब आप को हमारी एक इच्छा की पूर्ति करनी है ।"

"क्यों नहीं? जरूर पूरा करूंगा! तुम लोग यही चाहते हो न कि इस बधिक

हाथी की पिछली टांगों को भी बांध दे। तब अंग रक्षक से बोला—"अरे अंग रक्षक, आंखें तरेरे देखते क्या हो? तुम अपना कोई रहस्य छिपाना चाहते हो? पेड़ों की ओट में गये राजा दुर्मुख को कहीं छिपाकर तो नहीं आये हो?"

यह सवाल सुनकर अंग रक्षक चौंक पड़ा और बोला—"उग्रदण्ड महाराज! इस वक़्त मैं राजा दुर्मुख का अंग रक्षक नहीं हूँ, आप का अंग रक्षक हूँ न?"

इस पर बधिक भल्लूक ने दो क़दम आगे बढ़ाये। दांत भींचते अंग रक्षक से कहा—"अबे, तुम जानते हो कि दुर्मुख कहाँ छिप गया है? तुम्हारी यह गिद्ध दृष्टि ही इसका सबूत है। सच बताओगे या तुम्हारा सर काट दूं?" इन शब्दों के साथ उसने अपना परसु उठाया।

अंगरक्षक चीख़ उठा और उग्रदण्ड के पीछे जाकर खड़े हो बोला—"उग्रदण्ड महाराज! अपने अंग रक्षक की रक्षा करने की जिम्मेदारी अब आप ही की है!"

उग्रदण्ड अंग रक्षक की गर्दन पकड़कर आगे खींचते बोला—"अबे, अगर तुम दुर्मुख राजा के छिपने की खबर न दोगे तो तुम्हारा सर बचाना मेरे लिए नामुमक़िन होगा! तुम जब जंगली बेल लाने गये, तब तुमने भागनेवाले उस दुष्ट को देख लिया है। तुम उसके साथ कोई मंत्रणा करके यहाँ पर आये हो! यह बात सच है न? सच्ची बात न बताओगे तो तुमको हाथी की सूंड के हाथ सौंप दूंगा।" यों कहते नीचे गिरे हाथी की ओर अंग रक्षक को खींच डाला।

अंग रक्षक दहाड़े मार रोते हुए अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर बोला—"उग्रदण्ड महाराज! मैं आप की शरण चाहता हूँ। राजा दुर्मुख ने मुझे आधा राज्य देने का प्रलोभन दिया है। यह बताया है कि अगर मैं आप लोगों की आंखों में धूल झोंककर चला जाऊँ तो हम दोनों उदयगिरि नगर पहुँच सकते हैं। कहते हैं कि इसके

बाद वे अपने आधे राज्य के लिए मेरा राज्याभिषेक करेंगे।"

"हाँ! तुमने उसकी बातों पर यक़ीन कर लिया है न?" इन शब्दों के साथ वह ज़ोर से हँस पड़ा, तब अंग रक्षक से बोला-"अरे अंग रक्षक! तुम मानव होकर मानव की बातों पर विश्वास करते हो, यह बात मुझे आश्चर्यजनक मालूम होती है। उदयगिरि जाने पर तुम्हारा राज्याभिषेक नहीं होगा, बल्कि राजधानी के बीच कड़ी धूप में तुम्हें फांसी के तख्ते पर चढ़ाया जाएगा।"

"बस यही हो सकता है, उग्रदण्ड महाराज! मैं कहीं नहीं जाऊँगा। अपना शेष जीवन आप के साथ रहकर बिताऊँगा!" अंग रक्षक ने कहा।

तब तक सर हिलाते उनकी बातचीत सुननेवाला बधिक भल्लूक एक बार ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठा-"भल्लूक मांत्रिक की जय!" तब बोला-"तुम लोग यह नाहक़ चर्चा बंद कर दो। वास्तव में मैं किस काम से आया हूँ और तुम लोग यह बेकार की बकझक क्या कर रहे हो? तुम लोगों को शीघ्र भल्लूक मांत्रिक का अपमान करनेवाले उदयगिरि के राजा दुर्मुख को पकड़ लाकर मेरे सामने हाज़िर करना होगा! ऐसा न करोगे तो तुम सबके सर काटकर इन जंगली बेलों से माला बनाकर अपने कंठ में धारण कर लूँगा।"

ये बातें सुन राक्षस उग्रदण्ड क्रोध में आया और बोला-"बधिक भल्लूक! क्या तुम अकेले इन सब के सर काटने की ताक़त रखते हो?"

बधिक भल्लूक क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाते अपना परसु उठाकर उग्रदण्ड से बोला-"जानते हो, यह परसु भल्लूक महाराजा के वर का प्रसाद है। इसका सामना कोई नहीं कर सकता। लो, जाँच करके देखो, तुम अपने पत्थरवाले गदे से इसका सामना कर सकोगे या नहीं?" इन शब्दों

के साथ बधिक भल्लूक ने उग्रदण्ड की ओर एक क़दम बढ़ाया।

राक्षस उग्रदण्ड एक क़दम पीछे हटकर बोला—"बधिक भल्लूक, तुम थोड़ा शांत हो जाओ। मैंने शायद तुम्हें पहले ही आगाह कर दिया है कि हम दोनों का परस्पर एक दूसरे का संहार करना यहाँ के इन नीच दुष्टों के लिए फ़ायदेमंद ही होगा!"

"यह बात तो सही है, पर राजा दुर्मुख के सर का क्या होगा? उसके बिना मैं भल्लूक के यहाँ कैसे जाऊँ?" बधिक भल्लूक ने पूछा।

"उस राजा की हम सब लोग आस पास के जंगलों में खोज करेंगे। राज महलों और उद्यानों में विचरण करनेवाला वह कायर कमबख्त इस भयानक जंगल में अकेले कहीं नहीं जा सकेगा।" उग्रदण्ड ने जवाब दिया।

इसके बाद सब लोग मिलकर दुर्मुख के भाग जाने की दिशा की ओर बढ़े, तभी दूर से एक चीत्कार के साथ ये शब्द भी सुनाई दिये—"अबे! जल्दी बाण चलाओ! मैं उदयगिरि का राजा हूँ! तुम मेरी जान बचाओगे तो तुम्हें आधा राज्य दे दूँगा।"

वह आवाज़ राजा दुर्मुख की थी। अंग रक्षक क्रुद्ध हो उस ओर दौड़ते चिल्ला उठा—"मुझे राजा दुर्मुख ने जो आधा राज्य देने का वचन दिया, वह राज्य किसी और को देने जा रहा है। मैं इसे सहन नहीं कर सकता।"

जब अंग रक्षक वहाँ पहुँचा तो वह देखता क्या है! एक ऊँचे वृक्ष की झुकी डाल पर राजा दुर्मुख रेंगते जा रहा है। उससे थोड़ी दूर हटकर एक चीता अपने दाढ़ फैलाकर गुर्राते हुए दुर्मुख की ओर बढ़ रहा है। पेड़ के नीचे एक जंगली युवक तीर का निशान लगाये खड़ा हुआ है।

अंग रक्षक को देखते ही राजा दुर्मुख जोर से कराह उठा और बोला—"अरे, मेरे अंग रक्षक! देखते क्या हो? इस चीते का मुझ पर हमला करने के पहले ही बाण चलाकर इसे मार डालो। तुम इस मूर्ख जंगली युवक से धनुष-बाण खींच लो।"

ये बातें सुन अंग रक्षक ने जरा भी विचलित हुए बिना पूछा—"महाराज! क्या आप ने ही ये शब्द कहे थे कि चीते को मारने पर आधा राज्य दे देंगे?"

"हाँ, बे! मैंने ही कहे थे! मुझ पर हमला करने के पहले ही चीते को मार डालो।" दुर्मुख चीत्कार कर उठा।

"महाराज! अगर आप हम दोनों को आधा-आधा राज्य दे बैठेंगे तो आप को बचेगा ही क्या?" अंग रक्षक ने इतमीनान से पूछा।

"अबे! मुझे तो अपने प्राण बचाने हैं! प्राण! समझें!" राजा ज़ोर से चिल्ला उठा।

जंगली युवक ने अपनी भोली दृष्टि दौड़ाकर एक बार राजा दुर्मुख और अंग रक्षक की ओर देखा, तब कहा—"मुझे न राज्य चाहिए और न आधा राज्य ही। बस, पाँच सिक्के दिला दीजिए!" यों कहते दुर्मुख पर हमला करनेवाले चीते पर निशाना लगाकर बाण चलाया।

बाण सीधे जाकर चीते की बगल में जा धंसा। चीता गरज उठा, पर उसके पंजे की मार से राजा दुर्मुख की पकड़ डाल से ढीली हो गई। उसके साथ चीता भी राजा के साथ धम्म से नीचे जा गिरा। (और है)

गात्र-परीक्षा
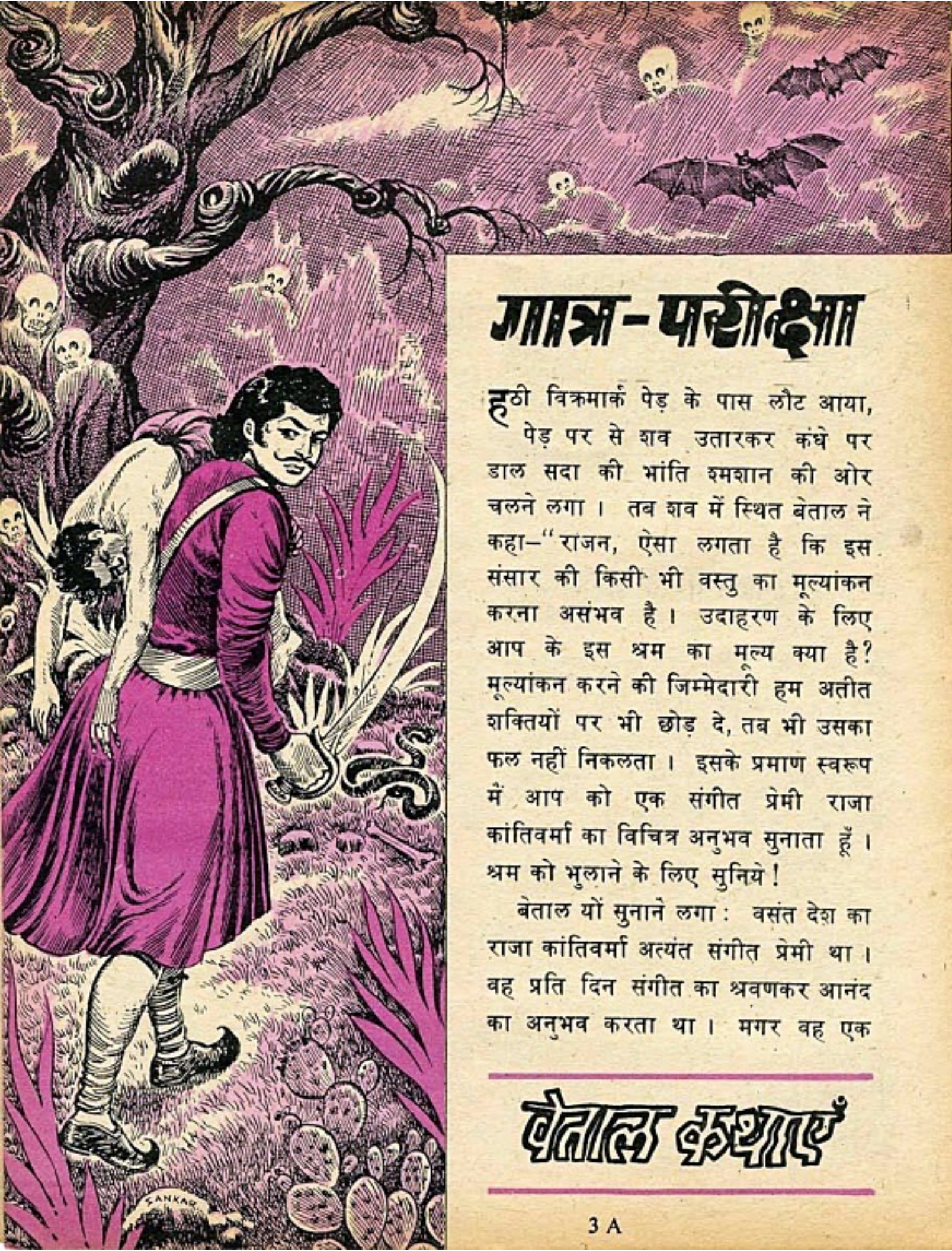
हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, ऐसा लगता है कि इस संसार की किसी भी वस्तु का मूल्यांकन करना असंभव है। उदाहरण के लिए आप के इस श्रम का मूल्य क्या है? मूल्यांकन करने की जिम्मेदारी हम अतीत शक्तियों पर भी छोड़ दे, तब भी उसका फल नहीं निकलता। इसके प्रमाण स्वरूप मैं आप को एक संगीत प्रेमी राजा कांतिवर्मा का विचित्र अनुभव सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये!

बेताल यों सुनाने लगा: वसंत देश का राजा कांतिवर्मा अत्यंत संगीत प्रेमी था। वह प्रति दिन संगीत का श्रवणकर आनंद का अनुभव करता था। मगर वह एक

बेताल कथाएँ

संगीत के विद्वान के मुँह से दुबारा सुनता न था, क्योंकि प्रत्येक संगीत विद्वान के गीत में उसे कोई न कोई तृटि दिखाई देती थीं। खासकर उसे संगीत विद्वान का गात्र या स्वर मधुर होना चाहिए था। लेकिन इस बात का निर्णय निश्चित रूप से राजा या सभासद नहीं कर पाते थे कि किस विद्वान का स्वर कैसा मधुर है?

प्रति नित्य दरबार में संगीत का प्रदर्शन होता रहा। कुछ लोगों के कंठ-स्वर ऐसे कर्कश थे कि राजा और दरबारी उन्हें सुनने में बड़ी अशांति का अनुभव करते थे।

उन्हीं दिनों में एक रात को सपने में सरस्वती देवी ने राजा को दर्शन देकर बताया-"तुम दक्षिणी दिशा के जंगलों में चले जाओ। वहाँ पर एक बरगद के नीचे बड़ी महिमा रखनेवाली एक वीणा है। तुम उसे अपने साथ ले आओ! उसकी उपयोगिता यह है कि उसे सामने रखकर कोई गीत गावे तो उसके कंठ-स्वर की बात वही स्वयं बता देगी! साथ ही गानेवाला व्यक्ति अपने कंठ-स्वर के अनुरूप आकृति भी प्राप्त करेंगे।" यों समझाकर सरस्वती देवी अदृश्य हो गईं।

राजा कांतिवर्मा को नींद से जागने पर ही पता चला कि उसने रात को जो कुछ देखा, वह एक सपना है। फिर भी राजा को वह सपना अत्यंत वास्तविक प्रतीत हुआ। सपने में देवी के कहे अनुसार राजा जंगल में चला गया। बरगद के नीचे एक वीणा रखी हुई थी।

राजा उस वीणा को उठा ले आया। फूलों से उसकी पूजा की। संगीत सभा के मध्य भाग में वीणा रख दी।

उस दिन से राजा के सम्मुख जो भी विद्वान अपना संगीत सुनाने के लिए आ जाता, उसे उस वीणा के गुणों का परिचय कराया जाने लगा। गीत गानेवाले कंठ-स्वर के प्रति वीणा अपनी राय देगी। उसकी राय के अनुरूप गायक का रूप-परिवर्तन भी होगा।

उस चेतावनी को गायक न समझ पाया और उसकी परवाह न की, इस वजह से ही वीणा ने प्रथम गायक के संबंध में बताया–"इसका स्वर तो गधे का है।" दूसरे ही क्षण वह गायक गधे के रूप में बदलकर रेंकते सभा से भाग गया।

इस घटना के बाद तीन दिन तक वीणा से डरकर कोई भी गायक अपना संगीत सुनाने का साहस न कर पाया। पर चौथे दिन कोई 'गान कला कोविद' नामक उपाधिधारी आया और उसने वीणा के सामने अपना संगीत सुनाया। उसने ज्यों ही अपना गीत समाप्त किया, त्यों ही वीणा ने कहा–"इसका स्वर भैंसे का है।" तत्काल गानकला कोविद भैंसे का रूप धरकर चिल्लाते भाग खड़ा हुआ। इसके दूसरे दिन एक गायक यह सोचकर वीणा के सम्मुख आया कि वीणा उसके संगीत का आक्षेप न कर पायेगी। पर वीणा ने कहा–"इसका स्वर तो कुत्ते का है।" दूसरे ही क्षण वह गायक कुत्ते के रूप में परिवर्तित हो भूंकते हुए सभा भवन से चला गया।

इन घटनाओं को देखने पर राजकुमारी कलकंठी का क्रोध उमड़ पड़ा। इस बार राजकुमारी ने वीणा के सामने बैठकर अपना गीत सुनाया। उसका कंठ अत्यंत मधुर था। अनेक दिनों के बाद दरबारियों ने ऐसा मधुर संगीत सुना था। इसलिए सभी दरबारी उस गीत-माधुर्य पर तन्मय
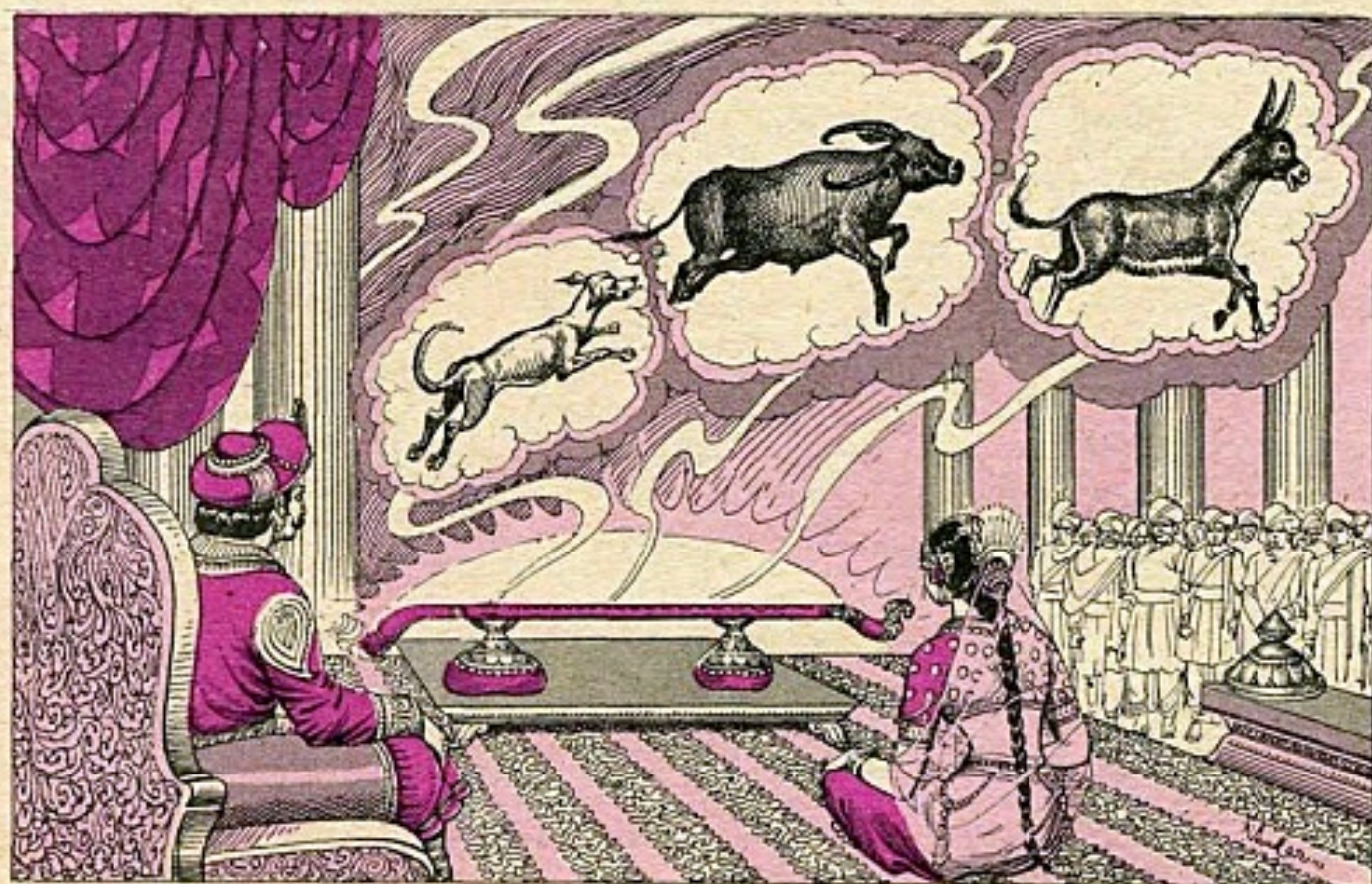
हो उठे। उसका गीत सुनकर वीणा ने अपना निर्णय सुनाया–"यह तो कोयल का स्वर है।" फिर क्या था, राजकुमारी उसी क्षण कोयल के रूप में बदलकर कुहकते वहाँ से उड़कर चली गई।

सभी दरबारी क्रोध के मारे पागल हो उठे। सब ने वीणा को तोड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। दूसरे ही क्षण वीणा के कारण विभिन्न प्रकार के रूप पानेवाले अपने वास्तविक रूप को प्राप्त हो गये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन! साक्षात् सरस्वती देवी ने राजा को जो वीणा प्रदान की, उसके कारण संगीत प्रेमी राजा का थोड़ा भी उपकार नहीं हुआ, उल्टे उसका अनर्थ हो गया। इसका कारण क्या है? इसका समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया: "राजा कांतिवर्मा को संगीत प्रेमी मानने का कोई प्रमाण दिखाई नहीं देता। उसके संगीत प्रेम में एक व्यसन ही दिखाई देता है। जैसे शराब का आदि होने पर शराबी उसे न भूलने की वजह से जो भी दारू मिल जाता है, उसे पीने को उद्यत हो जाता है, वैसे ही राजा के सामने जो भी अपना संगीत सुनाने आया उससे गवाकर दुखी हुआ, कोई भी संगीत प्रेमी उत्तम संगीत ही सुनेगा। यदि राजा को सपने में सचमुच सरस्वती देवी ने दर्शन दिया हो तो हमें यही समझना होगा कि उन्होंने राजा के भीतर ज्ञानोदय कराने के लिए उसे वह वीणा प्रदान की है। क्योंकि स्वर माधुर्य का निर्णय करने के लिए रसज्ञ व्यक्ति के लिए कान से बढ़कर बड़ी कोई चीज़ नहीं हो सकती। संगीत के माधुर्य को मापने के लिए कृत्रिम साधन कभी काम नहीं दे सकते। अंत में कांतिवर्मा ने भी इस बात का अनुभव किया होगा।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

स्वर्ग का रास्ता

मंगलापुर गाँव में पहुँचते-पहुँचते गोविन्द ने एक विचित्र दृश्य देखा। गाँव के बाहर की फ़सलों में नमी का अभाव था जिससे जमीन में दरारें पड़ रही थीं। फ़सलें सूखी जा रही थीं, मगर उन खेतों से सटा तालाब पानी से भरा हुआ था।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर गोविन्द ने एक और अनोखी बात देखी। एक बड़े बगीचे में कुछ लोग इमली और आम के वृक्षों को पानी सींच रहे हैं।

गोविन्द यह सोचते कि 'क्या इस गाँववालों के दिमाग ख़राब हो गये हैं?' उन आदमियों के पास पहुँचा और पूछा—"एक ओर पानी के अभाव में फ़सलें सूखती जा रही हैं तो दूसरी ओर इन बड़े वृक्षों को पानी क्यों सींच रहे हैं? जब तालाब भरा-पूरा है तो फ़सलें क्यों सूखी जा रही हैं?"

किसानों ने जवाब दिया—"तालाब के पानी से हमारे खेत कैसे सींचे जा सकते हैं? यह तालाब तो जमीन्दार साहब का है और खेत हमारे हैं। वे इमली और आम के पेड़ भी जमीन्दार साहब के हैं!"

ये बातें सुन गोविन्द ने क्रोध में आकर पूछा—"आप लोग तो बावरे मालूम होते हैं! मैं मानता हूँ कि तालाब जमीन्दार का है, मगर उसमें भरनेवाला पानी क्या जमीन्दार का दादा भेजता है?"

"भाई साहब! जमीन्दार के दादा की बुराई मत करो! वे तो देवता के समान थे! वे तो हमारे खेतों की सिंचाई के बाद ही अपने खेतों को सिंचवाया करते थे! बेचारे उनके खेत सूख भी जाते तो भी वे देखते रह जाते थे! उस राव बहादूर के पुत्र रामचन्द्र बहादूर भी अपने खेतों की सिंचाई के बाद बचा हुआ पानी हमारे

रजनीकांत वर्मा

खेतों की सिंचाई के लिए छोड़ देते थे। इस समय के जमीन्दार उनके पुत्र हैं। इनके जमाने की हालत तो तुम देख ही रहे हो न? हमारे खेतों के लिए एक बूंद पानी भी नहीं छोड़ते!" किसानों ने कहा।

ये बातें सुनने पर गोविन्द का दिल दहल उठा। जमीन्दार के इस व्यवहार के पीछे कोई विशेष कारण न था। मूर्खता एवं अंध विश्वास का वह शिकार हो गया था। इसलिए गोविन्द ने निश्चय कर लिया कि साम, दाम आदि उपायों के द्वारा जमीन्दार की इस नियति में परिवर्तन लाकर गाँववालों का उपकार करना चाहिए।

जमीन्दार की एक विचित्र आदत थी। उसे इस बात का शक था कि कहीं किसान लुके-छिपे अपने तालाब का पानी अपने खेतों में तो नहीं सींच रहे हैं! इसलिए वह रोज तालाब की मेंड़ पर जाता, सूखनेवाले किसानों के खेतों और लहलहानेवाले अपने खेतों को भी देख वह मन ही मन खुश हो जाता था।

एक दिन जमीन्दार जब तालाब के पास पहुँचा, तब उसने देखा, गोविन्द गेरुए वस्त्र, दाढ़ी-मूँछ व गले में रुद्राक्ष माला धारण कर कमर तक के पानी में खड़ा हुआ है, एक लोटे में तालाब का पानी भरकर उसकी जाँच करके फिर उसे तालाब में उड़ेल रहा है! गोविन्द का यह रवैया देख जमीन्दार को आश्चर्य हुआ। पर गोविन्द बराबर यही काम कर रहा था। इस पर जमीन्दार में कुतूहल जाग उठा। उसने गोविन्द के पास पहुँचकर मजाक़ करते हुए पूछा—"अजी बावरे सन्यासी! तुम पानी में ढूँढ़ते क्या हो? क्या अपनी कोई चीज़ उसमें खो गये हो?"

सन्यासी ने मुस्कुरा कर कहा—"जी हाँ! मैं लोटे भर नये पानी को ढूँढ़ रहा हूँ। मगर लगता है कि इस तालाब का ज्यादातर पानी पुराना-सा लगता है! उस लोक से पैदल चले आनेवाले मेरा श्रम

तो बेकार हो गया है! क्योंकि आसमान में लटकनेवाले एक पापी को मुझे इस तालाब के नये पानी से स्वर्ग में भेजना था!" यों कहकर गोविन्द जाने को हुआ।

इस पर जमीन्दार का कुतूहल घबड़ाहट में बदल गया। उसने गोविंद को रोककर पूछा—"महाशय! आसमान में पापी का लटकना कैसा है? नया पानी क्या है? उस पापी का इस तालाब के साथ संबंध क्या है? आप का उस लोक से पैदल चलकर आना कैसा? कृपया सविस्तार समझाइये।"

इसके उत्तर में गोविंद ने यों कहा: "मैं परलोक का निवासी हूँ। इस तालाब के मालिक रामचन्द्र बहादूर उधर न स्वर्ग में गये हैं और न इधर नरक में गये हैं। बीच में आसमान में लटकते हैरान हो रहे हैं। स्वर्ग में रहनेवाले उनके पिता राव बहादूर अपने पुत्र की इस हालत पर दुखी हो रहे हैं। उन्होंने मुझे यह समझाकर भेज दिया है कि इस तालाब का नया पानी एक लोटे भर लाकर उस पापी पर छिड़का दूँ तो वे स्वर्ग में जा सकते हैं। इसके वास्ते उन्होंने देवताओं की अनुमति भी प्राप्त की है। मगर ऐसा लगता है इस समय के जमीन्दार बड़े ही पापी हैं। तालाब के नीचे के खेत सूखते जा रहे हैं,

फिर भी पिछले साल का सारा पानी तालाब में जमा कर रखा है। न मालूम इस पापी की हालत क्या होनेवाली है?"

ये बातें सुन जमीन्दार डर के मारे कांप उठा और बोला—"महाशय! क्या तालाब के इस पानी में ऐसा महात्म्य है?"

"आप तो इसकी महिमा नहीं जानते! इस तालाब में भरनेवाले पानी में हिमालयों का पवित्र जल भी मिल रहा है। इसीलिए दो मृत जमीन्दारों के पाप-पुण्य इसी तालाब पर आधारित हैं। राव बहादुर के जमाने में वे इस तालाब का सारा पानी पहले किसानों के खेतों में भेजकर बचे हुए पानी से ही अपने खेत सींचा करते थे।

अपने खेतों में फ़सल न होने पर भी किसानों के खेतों में फ़सलों को लहराते देख प्रसन्न हो जाया करते थे। वे अपनी जिंदगी भर दाता कहलाये, मरने पर वे सीधे स्वर्ग में चले गये। इसके बाद उनके पुत्र रामचन्द्र बहादूर स्वार्थी निकले, अपने खेतों की सिंचाई के बाद ही दूसरों के खेतों की सिंचाई के लिए पानी देते थे। इस कारण वे न स्वर्ग में गये और न नरक में ही पहुँचे। बीच में लटक रहे हैं। इसलिए राव बहादूर उत्तम व्यक्ति हैं, रामचन्द्र बहादूर मध्यम स्वभाव के हैं और इस समय के जमीन्दार तो अधम व्यक्ति हैं।" गोविंद ने जमीन्दार की आँखों में वक्र दृष्टि से देखते हुए कहा।

दूसरे ही क्षण जमीन्दार गोविंद के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाने लगा– "महाशय! मैं ही वह अधम व्यक्ति हूँ। तुम्हारा पुण्य होगा, कृपया मेरे स्वर्ग में जाने का कोई उपाय बतला दीजिए।"

गोविंद ने जमीन्दार को अपने हाथों का सहारा देकर उठाया और समझाया– "आप डरिये मत! मनुष्य में पाप से डरने की प्रवृत्ति हो तो बस उसके सारे पाप मिट जाते हैं। मेरे कहे मुताबिक़ करेंगे तो आप के साथ आप के पिता भी स्वर्ग में चले जायेंगे। देखते हैं–आप के दादा ने जो पुण्य किया था, वह आप के पिता को स्वर्ग में खींच रहा है। पर आप ने जो पाप किया, वह आप के पिता को नरक की ओर खींच रहा है। जब आप अनेक पुण्य कार्य करेंगे, तभी आप के और आप के पिता को मुक्ति मिल सकती है। आप तुरंत इस तालाब के पानी को किसानों के खेतों में बहा दीजिए। आइंदा फिर कभी खेतों की फ़सलों को सूखने न दीजिएगा। अब आप जा सकते हैं।"

इसके बाद जमीन्दार ने गोविंद की बातों का पालन किया और धर्मदाता के रूप में मशहूर हो गये। उसके तालाब में हर साल नया पानी ही भरा करता था।

सोलह हज़ार रुपये

चन्दनावती नामक एक शहर में शोभाराम नामक एक गृहस्थ था। मन्साराम और तुलाराम नामक उसके दो दोस्त थे।

शोभाराम धनी था। यह बात जानकर ही मन्साराम और तुलाराम ने उसके साथ दोस्ती की। दोनों ने शोभाराम को समय पाकर सलाह दी–"दोस्त! तुम अपना सारा धन तिजोरी में छिपा रखोगे तो फ़ायदा ही क्या? उस पूंजी से अगर तुम व्यापार करोगे तो दस गुने लाभ होगा।"

"मैं तो कोई व्यापार करना जानता नहीं हूँ न? आखिर करे तो कौन-सा व्यापार करूँ?" शोभाराम ने अपनी असमर्थता प्रकट की।

"उफ़! आप क्यों इसकी चिंता करते हैं? आप पूंजी लगाइये! बस, सारा व्यापार हम चलायेंगे।" मंसाराम और तुलाराम ने हिम्मत बंधाई।

फिर क्या था, शोभाराम की पूंजी से व्यापार शुरू हुआ। अपने दोनों मित्रों पर विश्वास करके शोभाराम ने व्यापार की जिम्मेदारी का भार उन पर छोड़ दिया। दोनों ने मूल धन के साथ लाभ को भी हड़प लिया। इस तरह उनका दीवाला निकलवाकर बताया कि व्यापार में घाटा हो गया है।

आखिर उस वक़्त जाकर शोभाराम को पता चला जब कि उसके दोनों दोस्तों ने अपने अपने नाम पर पाँच-पाँच हज़ार रुपये बैंक में जमा किये। वह जान गया कि दोनों मित्रों ने उसे दगा दिया है। फिर भी उसने उन्हें डांटा नहीं, बल्कि पूर्ववत उनके साथ दोस्ती का भाव बनाये रखा।

थोड़े दिन बाद वह बीमार पड़ा। उसे लगा कि वह अब ज्यादा दिन तक जी नहीं सकता। उसने तुलाराम के पास

२५ साल पहले की चन्दामामा की कहानी

खबर भेजी। उसके आते ही शोभाराम ने कहा–"तुलाराम! तुम्हें मेरा एक उपकार करना होगा!"

"बताओ तो सही?" तुलाराम ने पूछा।

"अब मेरे अंतिम दिन निकट आ गये हैं। मरने के पहले मुझे अपनी पत्नी को बताना पड़ रहा है कि मैंने अपनी संपत्ति कहाँ-कहाँ छिपा रखी है! मगर तुम जानते हो, मेरी पत्नी तो फिजूल खर्ची है। उसके हाथ संपत्ति के लगते ही मिनटों में वह फूंक देगी।" शोभाराम ने कहा।

तुलाराम को जब पता चला कि शोभाराम के पास और संपत्ति बची हुई है, उसने मन में सोचा–"इसने तो आज तक मुझसे यह बात छिपा रखी है!" फिर बोला–"हाँ, हाँ, तुम सच बताते हो, कहावत भी है न? औरत के हाथ की संपत्ति और मर्द के हाथ का शिशु बच नहीं सकते! यह बात झूठ थोड़े ही हो सकती है?"

"मेरे पास अब सोलह हज़ार रुपये बचे हुए हैं। उन रुपयों को मैंने एक एक घड़े में एक एक हज़ार भरकर मेरे मकान के चारों कमरों में एक एक घड़ा एक एक कोने में गाड़कर रखा है। यह बात एक ही साथ मेरी पत्नी पर प्रकट होने नहीं देनी चाहिए। तुम्हें तो बस मेरा यही उपकार करना है कि तुम जब-तब आकर मेरे घर का हाल जानते रहो! जब तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मेरी औरत धन के अभाव में तकलीफ़ झेल रही है, तब तुम एक घड़े की बात बताओ! उस धन के खर्च होने तक तुम अन्य घड़ों की बात उसे मत बताओ।" शोभाराम ने समझाया।

"सुनो, तुम उन घड़ों की बात और किसी पर भूल से ही सही, प्रकट न करो। यहाँ तक कि तुम मंसाराम को भी मत बताओ। उस पर से मेरा विश्वास उठ गया है। इसलिए मैं तुम को यह रहस्य बताकर मेरा उपकार करने का निवेदन कर रहा हूँ।" शोभाराम ने फिर कहा।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, मैं जरूर तुम्हारे

वास्ते यह उपकार करूंगा। तुम मुझ पर विश्वास करके निश्चित रह सकते हो।" यों समझाकर तुलाराम चला गया।

उसी दिन शाम को शोभाराम ने अपने दूसरे दोस्त मंसाराम को बुला भेजा, उसे घड़ों का रहस्य बताकर बोला—"तुम्हें मुझे यह उपकार करना ही होगा! तुम यह रहस्य तुलाराम पर भी प्रकट मत करो। उस पर मेरा विश्वास नहीं है।"

"मैं उसे क्यों कर बताऊँगा? अब आप निश्चित रहिये। सारा व्यवहार मैं देख लूंगा।" यों मंसाराम ने हिम्मत बंधाई।

थोड़े दिन बीत गये। इस बीच शोभा राम का देहांत हो गया। एक दिन शोभाराम की पत्नी तुलसी ने तुलाराम से पूछा—"भैया! पैसे की बड़ी तंगी है। पच्चीस रुपये मुझे उधार दो।"

"बहन! मेरे पास रुपये ही कहाँ हैं? तुम उधार लेकर आखिर कितने दिन अपने परिवार को चला सकती हो? यह मकान बेच दो, कम से कम एक हज़ार रुपये हाथ लग जायेंगे।" तुलाराम ने सुझाया।

"मुझे यह बात नहीं सूझी। बेचने की बात तो मैं रात तक निर्णय करके बता दूंगी।" तुलसी ने कहा।

उसी दिन शाम को मंसाराम से कहा—"भैया! तुलाराम कहते हैं कि मैं यह

मकान बेच डालूं तो मुझे एक हज़ार रुपये मिल जायेंगे। तुम्हारी क्या राय है?"

इस पर मंसाराम ने कहा—"बहन! एक हज़ार क्या? अगर तुम यह मकान बेचना चाहोगी तो मैं तुम्हें पंद्रह सौ दूंगा।"

दूसरे दिन सवेरे जब तुलसी के घर तुलाराम आया तब उसने मंसाराम की बात उससे बताई। इस पर तुलाराम ने कहा—"तब तो मैं दो हज़ार रुपये दूंगा।"

सोलह हज़ार रुपये जब घड़ों में गड़े हुए हैं, ऐसे मकान को दो हज़ार रुपयों में खरीदने से नुक़सान ही क्या है? यों विचार कर मंसाराम ने ढाई हज़ार रुपये में खरीदने की इच्छा प्रकट की। इस

प्रकार दिन प्रति दिन तुलाराम और मंसाराम के बीच स्पर्धा आने के कारण नीलाम का दाम बढ़ता गया। अंत में तुलाराम ने दस हज़ार रुपये में उस मकान को खरीदने की सम्मति दी। उसका विचार था कि सोलह हज़ार रुपयों में दस हज़ार निकल भी जाये, छे हज़ार रुपये का लाभ ही तो रहेगा।

तुलसी कोई मूर्ख औरत न थी। उसने सोचा कि कहीं मंसाराम मकान का मूल्य कहीं और बढ़ा दे।

मगर मंसाराम ने दाम नहीं बढ़ाया। उसने तुलाराम से मिलकर डांटा–"अबे, तुमने तुलसी के घर को दस हज़ार रुपये में खरीदने का वचन दिया है। उसे खरीदकर आखिर तुम क्या फ़ायदा उठाने जा रहे हो?"

"तुमने क्यों उसका भाव बढ़ाया है?" तुलाराम ने भी उससे उल्टा सवाल किया।

दोनों ने सोचा कि असली बात एक दूसरे पर प्रकट हो गई है। अंत में मंसाराम ने तुलाराम से पूछा–"अबे, तुम दस हज़ार रुपये लाओगे कहाँ से? बैंक में तो तुम्हारे पाँच ही हज़ार रुपये जमा है?"

"तुम्हारे खाते में भी बैंक में पाँच ही हज़ार ही तो हैं? तुम वे रुपये मुझे उधार में दे दो! मैं तुम्हें एक हफ़्ते के अन्दर चुका दूंगा।" तुलाराम ने पूछा।

"यह नहीं होने का है! एक काम करेंगे। तुम्हारे और मेरे पाँच-पाँच हज़ार रुपये मिलाकर दस हज़ार में वह मकान खरीदेंगे और हम अपने दोनों के नाम पर वह मकान लिखवा लेंगे।" मंसाराम ने सलाह दी। तुलाराम ने यह बात मान ली।

इसके पूर्व उन दोनों दोस्तों ने शोभाराम को दगा देकर जो दस हज़ार रुपये हड़प लिये थे, वे रुपये लाकर तुलसी को दिये और वह मकान दोनों के नाम करवा लिया।

इसके बाद दोनों कुदाल लेकर उस मकान के कमरों के कोनों में खोदने लगे। बड़ी गहराई तक खोदने पर भी उन्हें एक भी घड़ा हाथ न लगा।
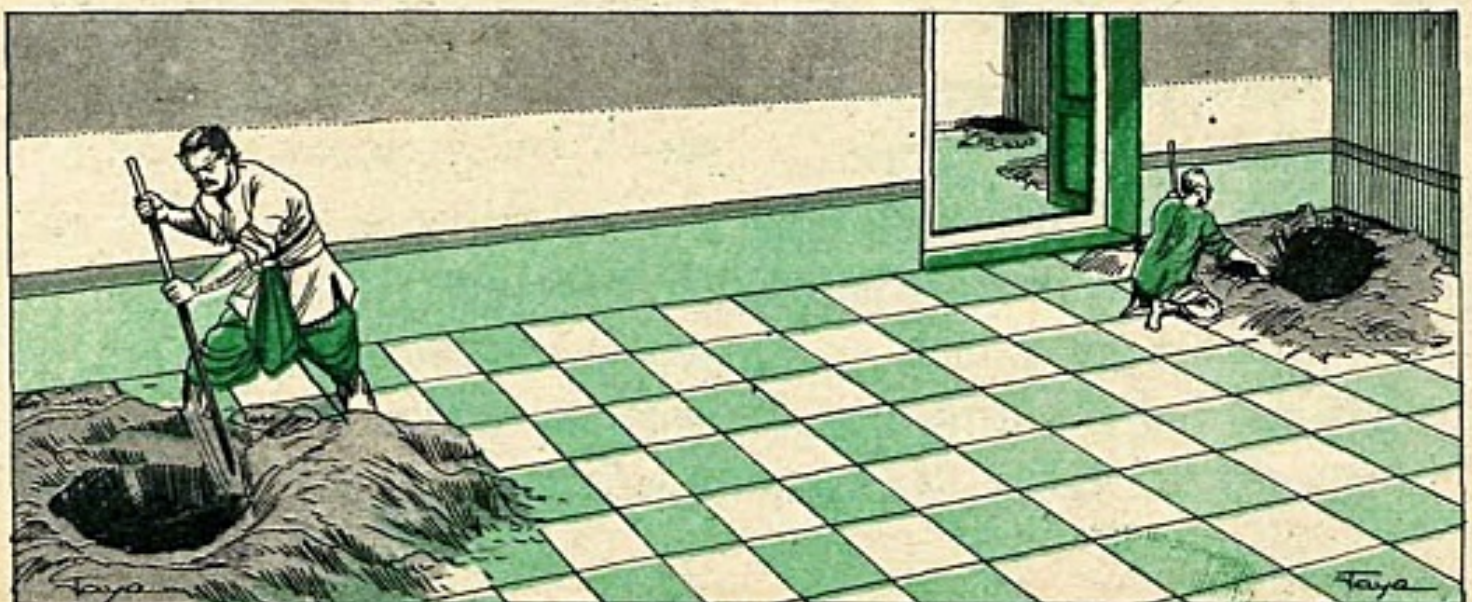
च्यवन महर्षि भृगु और पुलोमा के पुत्र थे। वे दीर्घ तपस्या करते बूढ़े हो गये। उनके चारों तरफ़ बांबी निकल आई।

राजा शर्याती वैवस्वत मनु के पुत्र थे। एक बार वे अपनी पुत्री और परिवार के साथ वन विहार करते च्यवन के तपस्या करनेवाले प्रदेश में पहुँचे। सुकन्या ने देखा कि च्यवन के चतुर्दिक व्याप्त बांबी में से कांति की किरणें फूट रही हैं। उसने सिपाहियों के द्वारा बांबी खुदवाई।

अपनी तपस्या भंग करने के अपराध में च्यवन ने सुकन्या, उसके पिता आदि को भी शाप दिया। शर्याती ने च्यवन से विनती की कि उनकी पुत्री ने अज्ञानवश बांबी खुदवाई है, इसलिए क्षमा करें। इस पर च्यवन ने शर्त रखी कि अगर उनके साथ सुकन्या की शादी की जाय तो वे अपने शाप को वापस ले लेंगे। तब राजा शर्याती ने वृद्ध च्यवन के साथ सुकन्या का विवाह किया और शाप से मुक्त हो गये।

च्यवन अत्यंत क्रोधी स्वभाव के थे। फिर भी सुकन्या ने बड़ी श्रद्धा-भक्ति से सेवा करके उनकी प्रशंसा प्राप्त की।

एक बार अश्विनी देवता च्यवन महर्षि के आश्रम से होकर जा रहे थे, उस वक़्त सुकन्या को देख उन लोगों ने पूछा—"बेटी, तुम यौवनावस्था में रहकर इस वृद्ध के साथ क्यों गृहस्थी चलाती हो? हमारे साथ चलो, तुम्हारे लिए एक युवक पति का प्रबंध करेंगे।"

सुकन्या ने उनकी बातें च्यवन को सुनाईं। पर च्यवन नाराज़ नहीं हुए, उन्होंने कहा—"तुम उनके कहे अनुसार करो।" पर उन्होंने अश्विनी देवताओं से पूछा—"अगर तुम लोग मुझे युवक बना सके तो शर्याती के यज्ञ के समय तुम्हें सोम पान दिलाऊंगा।"

अश्विनी देवताओं ने इस बात को माना और उन्हें निकट के एक तड़ाग में डुबकी लगाने को कहा। जब च्यवन ने तड़ाग में डुबकी लगाई तब उनके साथ दोनों अश्विनी देवताओं ने भी तड़ाग में डुबकी लगाई। इसके बाद तड़ाग में से तीन युवक बाहर आये। देखने में वे तीनों एक ही प्रकार के थे। उन लोगों ने सुकन्या से पूछा—"हम तीनों में से तुम अपनी पसंद के युवक को चुन लो।" सुकन्या ने उनमें से च्यवन को ही चुन लिया।

इस बीच राजा शर्याती ने यज्ञ के लिए सारे प्रबंध किये और अपनी पुत्री तथा दामाद ले जाने पहुँचे। वहाँ पर अपनी पुत्री को एक युवक के साथ गृहस्थी चलाते देख वे यह सोचकर दुखी हुए कि उनकी पुत्री ने कोई अनुचित कार्य किया है।

पर सुकन्या ने सारा वृत्तांत सुनाकर अपने पिता के दुख को दूर किया। इसके बाद च्यवन ने शर्याती के द्वारा यज्ञ कराया और उसमें अश्विनी देवताओं को यज्ञ-भाग दिलवाया। इन्द्र यह सोचकर क्रोध में आ गये कि च्यवन ने अर्हता न रखनेवाले अश्विनी देवताओं को यज्ञ-भाग दिलाया है और उन्होंने च्यवन पर वज्रायुध का प्रहार करना चाहा, पर च्यवन ने अपनी शक्ति से इन्द्र के हाथ को वहीं रोक दिया।

इसके बाद च्यवन ने इन्द्र के प्रति अनुग्रह करके उनके हाथ को विमोचन दिलाया।

एक बार च्यवन गंगा और यमुना के संगम में स्नान कर रहे थे, तब मछुओं ने जो जाल फेंका, उसमें वे फँस गये। मछुओं ने उनसे क्षमा माँगी, लेकिन च्यवन ने बताया—"तुम्हारे जाल में जो चीज फँसी है, वह तुम्हारी ही है। तुम मछलियों के साथ मुझे भी बेच लो।"

मछुए च्यवन को राजा नहुष के पास ले गये और उनसे निवेदन किया कि च्यवन का मूल्यांकन करें। नहुष ने बताया कि ब्राह्मण और गाय का भी मूल्य बराबर है, इसलिए उन्हें गाय देकर भेज दिया।

परशुराम

एक बार हैहेय वंश के राजा कार्तवीर्य जंगल में शिकार खेलने गये और वहाँ पर महामुनि जमदग्नि के आश्रम को देख मद में आकर अकारण ही उसे नष्ट किया ।

उस वक्त जमदग्नि के पुत्र परशुराम आश्रम में नहीं थे । लौटकर उन्होंने सारी बात जान ली और राजमहल में जाकर अपने परशु से कार्तवीर्य का सिर काट डाला ।

दूसरे दिन राजा कार्तवीर्य के पुत्र जमदग्नि के पास आये, तपस्या में लीन उन्हें मार डाला । उस समय भी परशुराम वहाँ पर नहीं थे ।
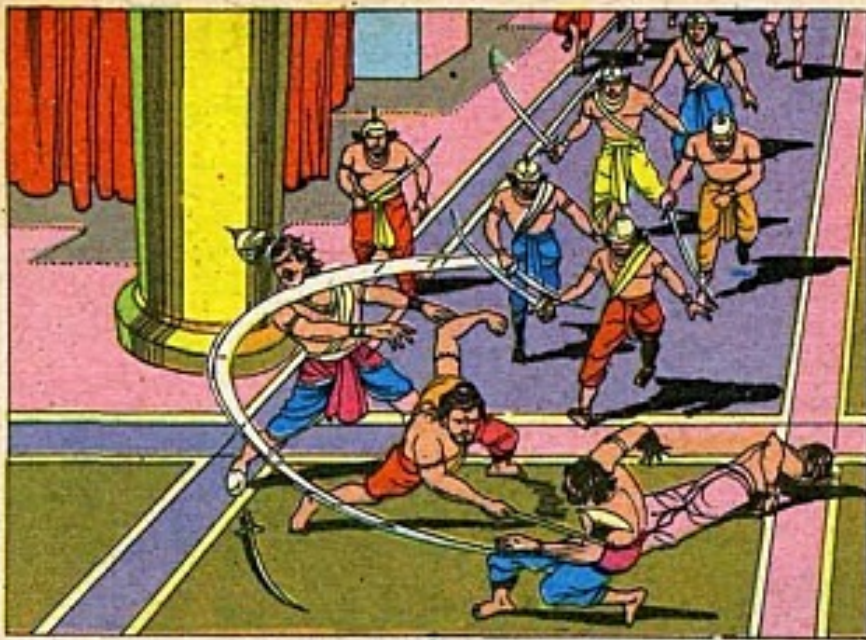
यह वृत्तांत मालूम होने पर परशुराम ने अपने परशु से कार्तवीर्य के पुत्रों का सामना किया और उन्हें मार डाला। परशुराम ब्राह्मण थे। फिर भी उनके सामने वे क्षत्रिय ठहर नहीं पाये।

अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के बाद भी परशुराम चुप नहीं रहें। उन्होंने सोचा कि सारे क्षत्रिय क्रूर और दुष्ट हैं, इसलिए उन्होंने क्षत्रिय जाति का निर्मूल करना चाहा।

इसके बाद परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रिय वंश का निर्मूल किया और क्षत्रियों के रक्त से लाल बने तड़ाग में अपने पिता को उन्होंने जल-तर्पण किया।

इसके बाद उन्होंने बड़ा भारी यज्ञ किया और उन्होंने क्षत्रियों को मार कर जो भूमण्डल जीत लिया था, उसे कश्यप को दान किया, तब वे महेन्द्र पर्वत पर तपस्या करने चले गये ।

इस प्रकार संसार के लिए क्षत्रियों का पिंड तो छूट गया, मगर राक्षसों के अत्याचार बने रहें। वे जनता को नाना प्रकार से तंग करने लगे ।

परशुराम को यह बात मालूम हुई । इस पर उन्होंने शिवजी की प्रार्थना की। राक्षसों का संहार करने के लिए आवश्यक शक्तियाँ प्राप्त कीं और तब वे महेन्द्र पर्वत से उतर आये ।

शिवजी के अनुग्रह से अपार शक्ति पाकर परशुराम ने राक्षसों का सर्वनाश किया और इस प्रकार संसार को राक्षसों के भय से मुक्त किया।

उस समय युवावस्था में स्थित रामचन्द्रजी ने शिव धनुष तोड़कर सीताजी के साथ विवाह किया। वे राजा जनक के मिथिला नगर से लौट रहे थे।
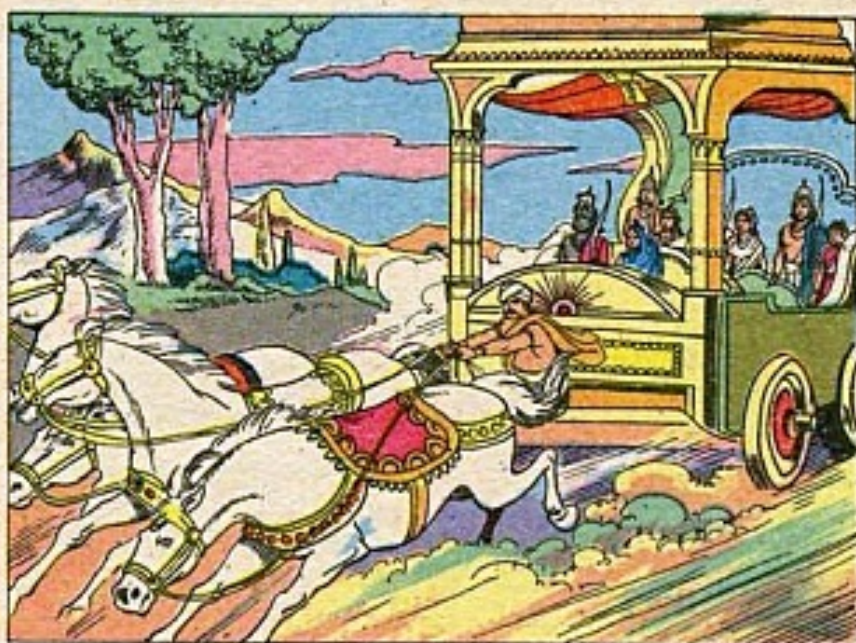
उस वक्त परशुराम ने रामचन्द्रजी का सामना किया और उन्हें चुनौती दी कि रामचन्द्रजी अपने विष्णु धनुष का प्रयोग करे। रामचन्द्रजी ने बड़ी आसानी से उसे तोड़ डाला। परशुराम ने समझा कि रामचन्द्रजी का अवतार भी उन्हीं के अवतार जैसा है। इस पर उन्होंने अपनी सारी शक्तियाँ रामचन्द्रजी को प्रदान कीं।

गरुड़

कश्यप की पत्नी विनता का पुत्र गरुड है।

गरुड कश्यप की दूसरी पत्नी कद्रुव और उसके पुत्र नागों की सेवा किया करता था। एक बार गरुड नागों को अपनी पीठ पर चढ़ाये आकाश में उड़ रहा था, तब धूप के ताप से तड़पकर नाग नीचे गिर पड़े। इस पर कद्रुव ने गरुड को डांटा।

गरुड ने अपनी माँ के पास जाकर पूछा—"माँ, मैं अपार शक्ति रखता हूँ, बलवान हूँ, फिर भी मैं कद्रुव और उनके पुत्रों की सेवा क्यों करता हूँ?" इस पर विनता ने समझाया—"बेटा! एक बार मैंने कद्रुव के साथ दाँव लगाया, जिसमें मैं हार गई। इस कारण हम दोनों को उनकी सेवा करनी पड़ रही है।"

इसके बाद गरुड ने कद्रुव के पास जाकर पूछा—"मुझे और मेरी माता को इस तरह दास बनाना आप के लिए उचित नहीं है। हम को इस दास्य वृत्ति से मुक्त कीजिए।" इस पर कद्रुव ने शर्त रखी—"अगर तुम मुझे अमृत ला दोगे तो तुम दोनों को मैं मुक्त करूँगी।"

गरुड ने कद्रुव की शर्त मान ली और वह अपनी माता से अनुमति लेकर देवलोक में गया। वहाँ पर कई लोग अमृत की रक्षा कर रहे थे। अमृत भाण्ड के चारों तरफ़ आग जल रही थी। अमृत भाण्ड के ऊपर एक चक्र घूम रहा था। दो महा सर्प उस भाण्ड की रक्षा कर रहे थे।

गरुड ने अमृत की रक्षा करनेवालों के साथ युद्ध करके उन्हें मार डाला, आग बुझायी, बड़ी युक्ति के साथ चक्र के नीचे घुसकर साँपों को मार डाला, तब अमृत लेकर वापस लौटा। यह समाचार मिलने पर इन्द्र ने गरुड पर वज्रायुध फेंका।

विमला नागर

उसके प्रहार से गरुड का एक पर कटकर नीचे गिरा। इन्द्र ने सोचा कि गरुड के साथ युद्ध करना संभव नहीं है, इसलिए गरुड के साथ संधि करके बताया कि वह अमृत किसी को न दे।

गरुड ने समझाया–"अपनी माता को दासता से मुक्त करने के लिए यह अमृत कद्रुव के लड़कों को देना ही पड़ेगा। मगर उनके द्वारा इसका सेवन करने के पहले ही मैं इसे वापस ले आऊँगा।"

इसी शर्त के मुताबिक़ गरुड ने अमृत भाण्ड को कद्रुव के पुत्रों के सामने दाभों पर रख दिया, अपनी सौतेली माँ से कहलवाया कि उसकी माँ विनता दासी नहीं है, तब कद्रुव के पुत्र नाग अमृत का पान करने को हुए, तभी गरुड अमृत भांड को उठाकर स्वर्ग को लौट आया। इस पर नागों ने इस आशा से दाभों को चाट लिया कि उस पर अमृत गिरा हुआ है। कहा जाता है कि दाभों को चाटने के कारण नागों की जीभ फट गई।

गरुड की सामर्थ्य की देवताओं ने बड़ी तारीफ़ की। श्री महाविष्णु ने गरुड को अपना वाहन बनने का अनुरोध किया। इन्द्र ने गरुड को वरदान दिया कि नाग उसका आहार बन जायेंगे।

इन्द्र के सारथी मातली के गुणकेशी नामक एक पुत्री थी। मातली ने सोच था कि गुणकेशी का विवाह सुमुख नामक नागकुमार के साथ करे। मातली को जल्दी पता चला कि गरुड ने सुमुख को मार डालने की प्रतिज्ञा की है, इस पर मातली श्री महाविष्णु और इन्द्र के पास पहुँचा और सुमुख को चिरायु बनाने का अनुरोध किया। इन्द्र ने मान लिया। गरुड ने क्रोध में आकर इन्द्र की अवहेलना की। इस पर विष्णु ने कहा–"देखें, तुम्हारी ताक़त कैसी है?" इन शब्दों के साथ उन्होंने अपना हाथ गरुड की पीठ पर रखा। गरुड उस भार को वहन न कर पाया। इस प्रकार उसका गर्व भंग हो गया।

मृतक का विवाह

नंदिनी के तट पर पचास मील की दूरी पर रुद्रपुर और देवगिरि नामक दो राज्य थे। रुद्रपुर की राजकुमारी रूपमती के साथ देवगिरि के राजा देवपाल ने विवाह किया। मगर जब उन्हें कोई संतान न हुई, तब हितैषियों की सलाह से देवपाल ने कालिंदी नामक एक युवती के साथ विवाह किया। कालिंदी स्वभाव से ईर्ष्यालू और दुष्ट स्वभाव की थी। मगर कालिंदी के भी कोई संतान न हुई।

एक बार देवपाल जंगल में शिकार खेलने गया। रास्ता भटककर अंधेरे के होते होते वह एक कुटी में पहुँचा। उसमें एक योगी रहा करता था। योगी ने देवपाल का आतिथ्य किया, जब उसे मालूम हुआ कि देवपाल के कोई संतान नहीं है, तब उसे सोने की एक माला देकर समझाया—"तुम इसे अपनी बड़ी रानी के गले में सदा पहने रखने को बताओ, वह ज़रूर गर्भवती हो जाएगी। कालांतर में उसके एक पुत्र होगा! तब यह माला उस लड़के के गले में पहना दो! अगर किसी कारण उसके गले से यह माला निकाली जाएगी, तब वह मृत व्यक्ति के समान होगा। पर पुनः यह माला उसके गले में पहना दी जाएगी, तो वह चलने-फिरने लग जाएगा।"

इसके बाद देवपाल ने वह माला लाकर रूपमती के गले में डाल दी। रूपमती जल्द ही गर्भवती हो गई और समय पर उसने एक सुंदर लड़के का जन्म दिया। मगर ऐसा लगा कि उस बच्चे में प्राण नहीं है। पर जब रूपमती के कंठ का हार निकालकर उस लड़के के गले में डाल दिया गया तब वह लड़का रो पड़ा और ऐसा लगा कि उसमें प्राण है।

अपनी सौत को गर्भवती हुए देख कालिंदी ईर्ष्या से भर उठी। राजा देवपाल ने वह माला कालिंदी के गले में डाली न थी, इस पर वह राजा पर नाराज़ हो गई। अपनी छोटी पत्नी का यह व्यवहार देख देवपाल ने कालिंदी के द्वारा अपने पुत्र की रक्षा का प्रबंध करके बच्चे का नाम गोलाप कुमार रखा।

गोलाप कुमार अपनी सौतेली माँ के षड़यंत्र से बचकर पलता रहा और आखिर वह अट्ठारह साल का हो गया। इस बीच देवपाल की मृत्यु हो गई। सारा राजमहल शोकसागर में डूब गया। राजा की अंत्येष्ठि क्रियाओं के अवसर पर गोलाप कुमार की रक्षा की व्यवस्था में ढिलाई आ गई। उस वक़्त एक दिन रात को जब गोलाप कुमार सो रहा था तब कालिंदी ने उसके गले की माला निकालकर छिपा दी, जब वह मृतक जैसा हो गया तब कालिंदी ने 'साँप, साँप' चिल्लाकर सब को जगा दिया। सब ने मृतक जैसे पड़े हुए गोलाप कुमार को देख यही सोचा कि साँप के डसने से गोलाप मर गया है।

दूसरे दिन कालिंदी ने मंत्री को बुलवाकर गोलाप की दहनक्रियाएँ संपन्न करने का आदेश दिया। अपने पति के साथ पुत्र की मृत्यु का भी समाचार सुनकर बड़ी रानी रूपमती शोक में डूब गई। पर उसने देखा कि उसके पुत्र के गले से माला गायब है। इस पर मंत्री को बुलाकर उसने समझाया— "मंत्री महोदय, मेरा पुत्र सचमुच मरा नहीं है, कालिंदी ने उसके गले से माला हड़पकर कृत्रिम रूप से उसकी मृत्यु कराई है।"

मंत्री ने कालिंदी को समझाया कि गोलाप की दहनक्रिया गुप्त रूप से अर्द्ध रात्रि के समय हो जाय तो अच्छा होगा। क्योंकि जनता इस बात पर विश्वास नहीं कर रही है कि वह साँप के डसने से मर गया है। यह सलाह पाकर कालिंदी ने

गोलाप की दहनक्रिया गुप्त रूप से संपन्न करने को मान लिया।

इसके बाद मंत्री ने अर्द्ध रात्रि के समय नदी में एक नाव का प्रबंध किया, अपने विश्वस्त नौकरों के साथ गोलाप के कलेवर और उसकी माता को भी नाव पर सवार कराया। नदी के तट पर स्थित रुद्रपुर को नाव भेज दी। फिर मंत्री ने सवेरा होने के पहले ही कालिंदी को जगाकर घबराहट भरे स्वर में सूचना दी–"बेटी! बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है। शव को नदी के उस पार मरुभूमि में जलाने के लिए नाव पर उस पार ले जा रहे थे, तब मंझधार में नाव डूब गई और शव के साथ रूपमती भी नदी में बह गई हैं।"

कालिंदी ने आदेश दिया–"तब तो उनकी लाशों को प्राप्त करने के लिए गोताखोरों को जल्दी भिजवा दीजिए।"

"अब तक लाशें तो समुद्र में पहुँच गयी होंगी।" मंत्री ने कहा।

कालिंदी स्वयं अपनी आँखों के सामने गोलाप की अस्थियों को नदी में मिलाना चाहती थी, पर वैसा न हो पाया, इस पर वह निराश हो गई। इस बीच रूपमती अपने पुत्र की लाश के साथ रुद्रपुर पहुँची और सारा वृत्तांत अपने बड़े भाई चन्दन को सुनाया। चन्दन

के सावित्री नामक एक पुत्री थी, बहुत समय पूर्व ही इस बात का निश्चय कर लिया गया था कि सावित्री गोलाप की पत्नी बनेगी। इसलिए शव के रूप में स्थित गोलाप को देख वह रो पड़ी। थोड़े समय बाद उसने यह निश्चय कर लिया कि कालिंदी के पास स्थित माला को किसी न किसी प्रकार प्राप्त करके गोलाप को जिलाकर सावित्री नामक अपने नाम को सार्थक बना लेना है। उसने रूपमती के द्वारा उस माला के सारे विवरण प्राप्त किये, उसी माला जैसी एक माला तैयार करवाई। तब वह अपनी निजी नाव में नदी के रास्ते देवगिरि पहुँची। उसने युक्ति से

अंत:पुर के सारे समाचार जान लिये। उसे मालूम हुआ कि कालिंदी के तलुवे में कोई फोड़ा हो गया है। पर राजवैद्य भी उसका सही इलाज नहीं कर पा रहे हैं!

सावित्री ने अपनी योजना के अनुसार कोई लेप तैयार किया, अपने को व्रणवैद्य बताकर वह अंत:पुर में चली गई। कालिंदी ने सावित्री का स्वागत किया। सावित्री ने व्रण की जाँच करके बताया–"रानीजी! मैंने तो इससे भी भयंकर व्रणों को तीन ही बार लेपन करके चंगा कर दिया है।"

"तुम मेरा इलाज करोगी तो तुम जो भी माँगोगी सो दूंगी।" कालिंदी ने वचन दिया।

सावित्री ने तिरछी नज़र डालकर कालिंदी के गले की माला को भांप लिया। उसे इस बात का संदेह न रहा कि रूपमती ने माला के जो विवरण दिये थे, वही माला है वह! सावित्री ने जो माला तैयार कराई थी, उसमें और कालिंदी के गले की माला में कोई बड़ा अंतर न था।

इसके बाद कालिंदी के हाथों में स्थित कंगन की ओर इशारा करते हुए सावित्री ने कहा–"महारानीजी! अगर मेरा इलाज कामगार सिद्ध होना है तो आप की देह पर सोना नहीं रहना है। आप कृपया अपने कंगन और अंगूठियाँ निकाल दीजिए।"

कालिंदी ने उन्हें निकालकर अपनी दासी के हाथ दिये। सावित्री ने तो भांप लिया कि कालिंदी ने अपने गले की माला नहीं हटाई है। पर उसने प्रकट रूप में कुछ नहीं कहा। उस वक़्त वह कालिंदी के तलुवे के व्रण पर लेपन करके अपनी नौका में लौट गई।

दूसरे दिन जब सावित्री लौट आई, तब कालिंदी ने पूछा–"सुनो, तुमने जो दवा दी, वह जरा भी गुणकारी नहीं रही।"

सावित्री ने उसके कंठ की ओर देख पूछा–"आप के गले में वह क्या चीज पड़ी है?" यों कहते वह कालिंदी के गले का हार निकालकर बोली–"आप की देह

पर इस सोना के रहते मेरी दवा कैसे काम देगी?" इन शब्दों के साथ अपने थैले में से सावित्री ने कागज़ की एक छोटी-सी थैली निकाली, माला उसमें डालकर धागे से थैली का मुँह बांध दिया।

सावित्री का यह काम कालिंदी को जरा भी पसंद न आया। जब उसके तलुए पर दवा का लेपन किया जा रहा था, तब बराबर उसकी दृष्टि कागज़ की उस थैली पर ही जमी रही।

सावित्री ने दवा के लेपन का काम समाप्त कर कागज़ की थैली को दवाइयों के अपने थैले में रखते हुए कहा—"अब देखिये! मेरी दवा की महिमा!"

"ओह! मेरी माला! तुमने मेरी माली क्यों ले ली है?" कालिंदी ने पूछा।

"महारानीजी! क्या मैं यह छोटा-सा उपहार भी पाने योग्य नहीं हूँ?" सावित्री ने भोला बनकर पूछा।

"मेरे व्रण के चंगे होने के बाद मैं इसके दस गुने मूल्य का पुरस्कार दूंगी। तुम अभी यह माला मुझे दे दो।" कालिंदी ने कहा।

"ओह! आप को मेरे इलाज पर विश्वास नहीं है! अच्छी बात है! ले लीजिए!" इन शब्दों के साथ सावित्री ने कागज़ की थैली बाहर निकाली, उसकी

गांठ खोलने का अभिनय करते आख़िर खीझकर कागज़ की थैली के निचले हिस्से को फाड़ डाला, फिर क्या था, माला नीचे गिर पड़ी। सावित्री ने वह माला समीप में स्थित कालिंदी की एक दासी के हाथ देकर फटी थैली और नीचे गिरे कागज़ के टुकड़ों को चुनकर अपने थैले में डाल लिये। तब कालिंदी से अनुमति लेकर अपनी नाव में पहुँच गई। फिर उसी वक़्त अपनी नौका में रुद्रपुर पहुँच गई।

गोलाप के प्राणोंवाली माला सावित्री के हाथ लग गई थी। उसने कालिंदी की दासी के हाथ जो माला दी थी, वह नकली माला थी। सावित्री के पास

कागज़ की जो थैली थी, उसके भीतर एक और छोटी-सी कागज़ की थैली थी। दोनों थैलियों के मुँह मिले हुए थे, इसलिए सावित्री ने कालिंदी के गले से जो माला निकाली थी, वह भीतरी थैली में गिर गई थी। उसके नीचे जो थैली थी, उसमें पहले से ही एक नकली माला रखी हुई थी। इसलिए जब थैली का निचला हिस्सा फाड़ा गया था, तब वह नकली माला नीचे गिर गई। उसे अगर कालिंदी के हाथ दे तो शायद वह इस धोखे का पता लगायेगी, इस विचार से सावित्री ने वह माला कालिंदी की एक दासी के हाथ दे दी थी। पर कालिंदी ने इस विचार से उसी वक़्त उस माला को धारण नहीं किया कि आख़िर उसकी माला तो उसके पास लौट आई है। अलावा इसके सावित्री ने अंतिम क्षण तक कालिंदी को बातों में लगाये रखा था।

सावित्री अपने घर लौट आई, उसने अपने पिता से यही निवेदन किया कि गोलाप के कलेवर के साथ उसका विवाह करे। पर सावित्री के पिता ने नहीं माना, उसने यही बताया कि गोलाप के जीने का कोई उपाय करे तभी वह उसके साथ सावित्री का विवाह करेगा।

सावित्री ने दृढ़ स्वर में कहा—"अगर गोलाप मेरे पति हैं तो मेरे पातिव्रत्य की महिमा से वे ज़िंदा हो जायेंगे।" फिर क्या था, मृतक के साथ सावित्री का विवाह हुआ। सावित्री ने अपनी फूफी के हाथों से अपने गले में मंगल सूत्र बंधवा लिया, तब वह जो माला लाई थी, उसे गोलाप के गले में बांध दिया। गोलाप जीवित हो उठा।

इसके बाद एक दिन गोलाप अचानक अपनी माता और पत्नी के साथ देवगिरि को लौट आया। कालिंदी अपनी आँखों पर यक़ीन न कर पाई। मगर उसने सावित्री को पहचान लिया। उसके असली बात जानने के पहले ही नये राजा गोलाप ने उसे आजीवन कारागार का दण्ड सुनाया।
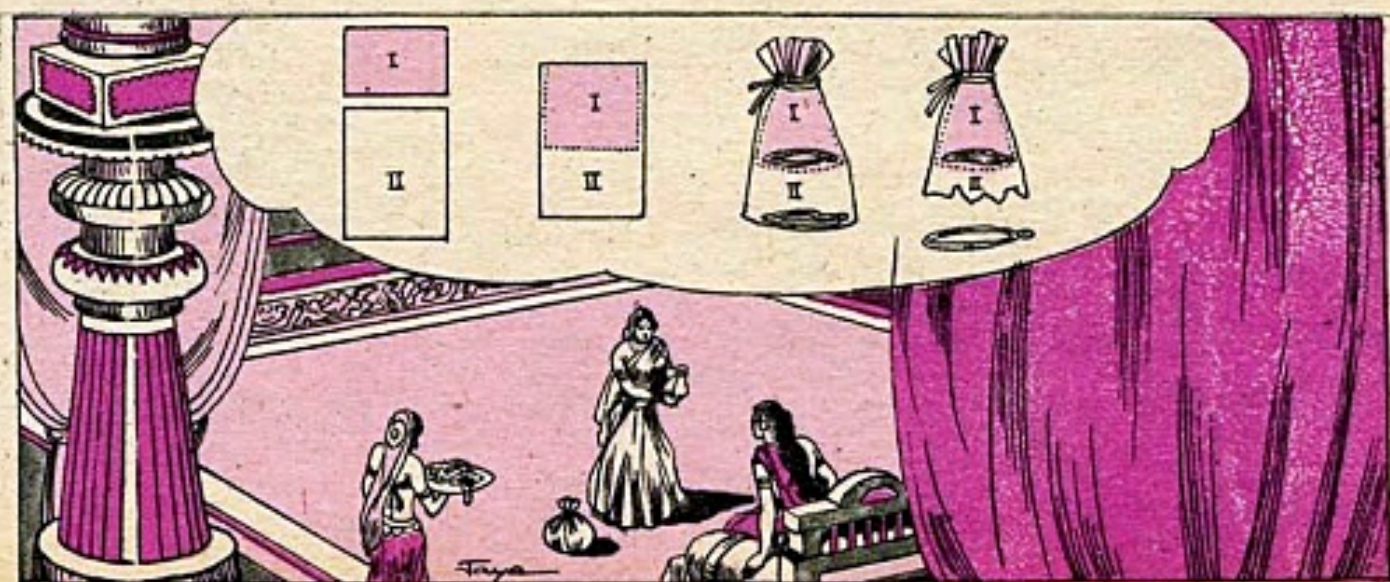
झूठी उदारता

श्रीनिवासपुर का रंगनाथ गाँव का सबसे बड़ा धनी था। गाँव में शायद ऐसा कोई व्यक्ति न था जिसने रंगनाथ के यहाँ से उधार न लिया हो। उसकी विशेषता यह थी कि वह अव्वल दर्जे का कंजूस होकर उदार व्यक्ति के रूप में अभिनय किया करता था।

एक बार उस गाँव में एक कथावाचक आया। उसने रंगनाथ के आश्रय में जाकर निवेदन किया कि उसके द्वारा पुराण कथा का आयोजन करवा दे। रंगनाथ को चार-पाँच दिन अपने घर बुलाया, पर उसने एक भी पैसा न दिया।

उसी वक़्त रंगनाथ के घर रामगुप्त नामक एक व्यक्ति उधार माँगने आ पहुँचा। रंगनाथ ने रामगुप्त को कथा वाचक का परिचय कराकर समझाया– "रामगुप्तजी! बेचारे ये कथा वाचक चार-पाँच दिन पहले हमारे गाँव में आये हैं। ये अपने पुराणपाठ का प्रबंध करने का अनुरोध कर रहे हैं। मेरे पास बिलकुल समय नहीं है। आप अगर बुरा न माने तो इनकी थोड़ी मदद कीजियेगा।'

रामगुप्त ने स्वीकृति सूचक सर हिलाया।

इस पर रंगनाथ बोला–"हाँ, सुनिये! कथावाचक बताते हैं कि उनके हाथ एक कौड़ी भी बची नहीं है। आज इनके भोजन का खर्च आप के जिम्मे है।" यों कहकर रंगनाथ ने रामगुप्त के हाथ उधार के रुपये सौंप दिये।

रामगुप्त कथा वाचक को अपने साथ एक दूकान में ले गया। चावल-दाल दिलाकर उस दिन रात को गाँव के मंदिर के पास पुराण कथा का प्रबंध भी किया।

कथा वाचक ने पुराण कथा का प्रारंभ करते हुए कहा–"वास्तव में मेरे इस गाँव

कल्पना अग्रवाल

में आने का मूल कारण रंगनाथ साहब की उदारता ही समझ लीजिए। उनका यश चारों तरफ़ फैल गया है। वे तो याचकों के लिए कल्प वृक्ष के समान हैं। पूर्णिमा के चांद में भी दाग हो सकते हैं, मगर रंगनाथ साहब के मुखचन्द्र में नाम मात्र के लिए भी नहीं है। वे तो त्याग में राजा शिबि और सम्राट दिलीप से कहीं आगे हैं, यह कहे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।"

अपनी यह प्रशंसा सुनकर रंगनाथ फूला न समाया। पुराण कथा समाप्त हो गई। सब के साथ घर लौटते हुए रंगनाथ ने सोचा–'कथा वाचक के द्वारा यों मेरी तारीफ़ करने में उसका उद्देश्य क्या है?'

दूसरे दिन कथा वाचक ने रंगनाथ के घर जाकर चन्दा माँगा। रंगनाथ ने एक कागज़ पर अपना नाम लिखकर उसके आगे पच्चीस रुपये का चन्दा लिख दिया। उस कागज़ को कथा वाचक के हाथ देकर समझाया–"सुनोजी! आप और लोगों के पास चन्दा वसूल करके तब मेरे घर आ जाइये, मैं अपना चन्दा दे दूंगा। इस वक़्त मेरे मुंशी नहीं है।"

उस कागज़ के सहारे कथा वाचक ने सब से चन्दा लिखवाकर सौ रुपये तक वसूल कर लिया। उस दिन शाम को कथा वाचक रंगनाथ को देखने गया। रंगनाथ ने दुनिया भर की बातें तो कीं, लेकिन चन्दा नहीं दिया।

दूसरे दिन कथा वाचक रंगनाथ के घर दो बार गया। एक बार उसे उत्तर मिला कि वे घर पर नहीं हैं और दूसरी बार उसे मुंशी ने बताया कि वह पूजा में बैठे हैं।

तीसरे दिन जब कथा वाचक रंगनाथ के घर पहुँचा। तब वह किसी के साथ बात कर रहा था। कथा वाचक देर तक इंतज़ार करता रहा, तब बोला–"अजी साहब! मैं कल अपने गाँव जा रहा हूँ! कृपया आप अपना चन्दा दिलवा दें।"

"यह आप क्या कहते हैं? क्या मेरे मुंशी ने नहीं दिया? मैंने तो उसे परसों

हा चन्दा देने को बताया था? आज मुंशी गाँव में नहीं है। आप कल आ जाइये।" रंगनाथ ने कहा।

कथा वाचक निराश हो घर लौट गया। दूसरे दिन यह पता लगाकर कि मुंशी लौट आया है, रंगनाथ के घर पहुँचा। मुंशी ने कथा वाचक को देख पूछा—"क्या बात है? क्या किसी खास काम से आये हैं?"

कथा वाचक ने सारा समाचार कह सुनाया।

मुंशी ने पल भर सोचकर कहा—"कथा वाचकजी! कृपया आप अन्यथा न सोचिये! चन्दे की रक़म कागज़ पर लिखने तक ही रंगनाथजी उदार व्यक्ति हैं। उनकी रक़म देख बाक़ी लोग जो चन्दा देते हैं, उनके बारे में वे यही सोचते हैं कि उनके कारण ही सब कोई चन्दा देते हैं। आप कृपया उनसे चन्दा की आशा न रखियेगा।"

तब जाकर कथा वाचक की समझ में असली बात आ गई। उस दिन शाम को रंगनाथ जब कई लोगों के साथ बात कर रहा था, तब कथा वाचक ने प्रवेश करके कहा—"महाशय! मैं अपने गाँव जा रहा हूँ। मुझे आज्ञा दीजिए! आप ने मुझसे एक ही बार झूठ कह दिया। आप ने अपने मुंशी से चन्दा देने की जो बात कही थी, वही आप का कहा हुआ एक मात्र झूठ है। मैंने आप की प्रशंसा करते हुए कई झूठ बोल गया। मैं गरीब आदमी था, इसलिए लाचार होकर मुझे झूठ बोलना पड़ा। इसीलिए शायद मुझ पर आप का अनुग्रह नहीं हुआ है।"

सब के बीच रंगनाथ को लगा कि सरे आम उसका अपमान हो गया है। उन सबने कथा वाचक को चन्दे दिये थे। इसलिए लौटनेवाले कथा वाचक को वापस बुलवाकर मुंशी को डांटा और उसके हाथ कथा वाचक को पच्चीस रुपये दिलाये।

गाँववाले यह सोचकर खुश हुए कि इतने समय बाद ही सही, रंगनाथ का सबके बीच अपमान करनेवाला व्यक्ति भी कोई निकल आया है।

बुरे का बड़प्पन

गोकुल का पुत्र नकुल जब बीस साल का हुआ, तब भी वह मूर्ख ही बना रहा। गोकुल इस ख्याल से परेशान रहने लगा कि आख़िर उसे कैसे बदला जाय! उन्हीं दिनों में उस गाँव में चिरंजीवी नामक एक सज्जन आया। गोकुल ने पहले ही सुन रखा था कि चिरंजीवी मूर्ख को भी अक़्लमंद बना सकता है, इसलिए उसने चिरंजीवी को अपने घर निमंत्रित किया और उसे अपने पुत्र का किस्सा सुनाकर अपना दुख प्रकट किया।

चिरंजीवी ने नकुल को अपने निकट बुला भेजा, उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखकर कहा–"गोकुल! तुम नाहक़ चिंता क्यों करते हो? तुम्हारा पुत्र अगर बुरे काम करता है तो क्या हुआ? सच्ची बात तो यह है कि अच्छे कामों की अपेक्षा बुरे काम करना ही ज़्यादा कठिन है! इसलिए जो कठिन काम करता है, वह कभी न कभी ज़रूर सुधर जाएगा!"

नकुल ने अपने पिता की ओर लापरवाही भरी दृष्टि दौड़ाई। परिहासपूर्ण हँसी हँसकर वहाँ से चला गया। गोकुल ने निराश में आकर कहा–"मैंने सोचा था कि आप मेरे बेटे को सही रास्ते पर लायेंगे, पर आपने तो और बिगाड़ दिया!"

"हूँ, तब तो तुम मेरी बातों पर ही शक करते हो?" चिरंजीवी ने पूछा।

"वरना क्या आप जैसे अनुभवी लोगों के मुँह से ऐसी बातें कहीं शोभा दे सकती हैं? भला व्यक्ति कहलाना कठिन है, बुरे कहलाने में कठिन क्या है? पल-भर में कोई भी बुरा कहलवा सकता है!" गोकुल ने कहा।

"यूँ ही कहने से होता क्या है? आप मेरे और आपके लड़के के संबंध में भी

यह साबित करके दिखाइये तो सही!" चिरंजीवी ने चुनौती दी ।

इस पर गोकुल ने फिर अपने लड़के को बुला भेजा । नकुल ने सोचा कि चिरंजीवी भी उसकी बातों का समर्थन करते हैं, इसलिए अपने पिता के द्वारा की जानेवाली आलोचना से सदा के लिए मुक्त हो सकता है, यों विचारकर नकुल अपने पिता के सामने आ पहुँचा ।

तीनों मिलकर उस गाँव के एक धनी किसान रामदास के घर पहुँचे । रामदास ने अपना अनुभव उन्हें सुनाया । रामदास उस गाँव में इस बात के लिए बहुत ही लोकप्रिय था कि वह अपने नौकरों के प्रति अच्छा व्यवहार करता है । ऐसे व्यक्ति ने एक दिन किसी कारण से क्रोध में आकर अपने एक नौकर पर जिंदगी में सिर्फ़ एक ही बार हाथ चलाया था । फिर भी वह अपने नौकरों के बीच बुरा आदमी बन गया । इसके बाद रामदास ने अपने नौकरों के प्रति बड़ी उदारता दिखाई, फिर भी वह उन लोगों के बीच बुरा ही बना रहा । इस बात को दृष्टि में रखकर रामदास ने कहा—"चाहे लाख अच्छे काम करें, पर एक बुरे काम से वे सारे काम बुरे बन जाते हैं ।"

इसके बाद गोकुल अपने पुत्र और चिरंजीवी को साथ ले तीन बुजुर्गों के पास ले गया । सबने यही बताया कि अच्छा नाम कमाना कठिन है और बुरा नाम पाना तो बड़ा ही आसान है ।

इस पर गोकुल ने उनसे पूछा—"अब बताइये, आपके पास इसके लिए क्या जवाब है?"

"ठहर जाइये! मैं अपनी बातों की सचाई भी साबित करता हूँ । इस गाँव में आवारे के रूप में मशहूर किसी एक का नाम बताइये!" चिरंजीवी ने पूछा ।

"किसी का नाम क्यों ले? मेरा ही लड़का है न? मगर यह हमारे साथ है,

इसलिए मैं दूसरे का नाम बता देता हूँ। उसका नाम है चन्द्रन!" गोकुल ने कहा।

इसके बाद वे तीनों रामदास वगैरह बुजुर्गों के पास पहुँचे और चन्द्रन के बारे में उनकी राय पूछी।

"अजी, वह तो मूर्ख और बदतमीज है। उसका मुँह देखने से ही पाप लगता है।" सब ने एक स्वर में यही बात बताई।

तब वे तीनों चन्द्रन के पास गये! चिरंजीवी ने उससे कहा—"सारे गाँव के लोग तुमको दुष्ट बताते हैं; क्या तुम यह बात जानते हो?"

"हाँ, जानता हूँ! मगर कोई कमबख्त मेरे बारे में कुछ भी सोचे, मुझे इसकी क्या चिंता है?" चन्द्रन ने झट कह दिया।

जब तीनों चन्द्रन के घर से लौट रहे थे, तब रास्ते में उन्हें एक भिखारी दिखाई दिया। चिरंजीवी ने उसे निकट बुलाकर डांटा—"अबे, तुम देखने में बैल जैसे हो! कोई काम-वाम करके अपना पेट क्यों नहीं भरते? इस तरह भीख क्यों माँगते हो?"

"आप चाहे तो भीख दीजिए! वरना चुप रहिए। मगर मुझे डांटने का आप को क्या अधिकार है? मैं भीख माँगता हूँ, पर मैं कोई बुरा काम नहीं करता, समझें!" भिखारी ने जवाब दिया।

उसके जाने पर चिरंजीवी ने मुस्कुराकर कहा—"देखते हैं न? भिखारी भी डांट-डपट सुनने को तैयार नहीं है। सारा गाँव थूकते रहने पर भी बुरा आदमी अपने बुरे काम नहीं छोड़ता, उल्टे उन्हें सहता जा रहा है। ऐसी सहनशीलता बुरे लोगों में ही देखी जा सकती है। इसीलिए मैंने कहा था कि बुरे आदमी बनकर रहना कठिन है। इस दुनिया में मानव का जन्म धारण कर मान और इज्जत को छोड़ने से बढ़कर कठिन काम और कौन हो सकता है?"

चिरंजीवी की बातों के व्यंग्य को गोकुल ने भांप लिया। नकुल भी उन बातों को सुनकर लज्जित हो उठा। उस दिन से नकुल ने अपने बुरे कामों को त्याग दिया। वह एक अच्छा आदमी बन बैठा।

देवी भागवत

शुक ने राजा जनक के मुंह से सारा वृत्तांत सुनकर पूछा–"आप की बातें मैंने प्रसन्न चित्त के साथ सुनीं, मगर मेरे संदेह का निवारण नहीं हुआ। विवाह के बाद पत्नी से सुख पानेवाला व्यक्ति उसमें फँस जाता है, अगर सुख प्राप्त नहीं हुआ तो दुखी हो जाता है। ऐसा व्यक्ति मोक्ष कैसे पा सकता है?"

"निर्लिप्त भाव से करनेवाले कर्म भले ही बुरे हों, पर वे अच्छे बन जाते हैं।" जनक ने जवाब दिया।

"माया में फँसा हुआ व्यक्ति निर्लिप्त कैसे बन सकता है? केवल दीप का नाम लेने से अंधकार दूर नहीं होता है न? इसी प्रकार केवल शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने से मानव के भीतर का अज्ञान दूर नहीं होता है न? क्या इसके लिए आचरण के अनुभव की आवश्यकता नहीं है? जब आप के भीतर संपत्ति, पुत्र, नारी और राज्य की कामना है, तब आप जीवनमुक्त कैसे हो सकते हैं? एक राजा के रूप में आप को दुष्टों को दण्ड देना और शिष्ट जानों की रक्षा करना आवश्यक हो जाता है न? इन भेदों का पालन करनेवाले आप मोक्ष की प्राप्ति पर कैसे विश्वास करते हैं? मेरी बात आप से भिन्न है। मेरे लिए कुछ नहीं है–न सुख है, न दुख! शत्रु भी नहीं और मित्र भी नहीं। मान और अपमान भी नहीं हैं! शासन करने के लिए एक छोटा सा गाँव तक मेरे अधीन नहीं

५. मत्स्यगंधी का जन्म

है। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए ही तो जीवनमुक्ति हो सकती है?" शुक ने पूछा।

"तुम यह मत सोचो कि सन्यास लेकर जंगलों में जाने मात्र से ही चिंताओं से मुक्त हो जाते हो! ममता व आसक्ति को त्यागकर तुम जो भी मार्ग अपनाओ, मोक्ष पा सकते हो! अन्यथा तुम जिस किसी मार्ग का अवलंबन करो, तुम्हें मुक्ति नहीं मिलेगी!" जनक ने समझाया।

इसके बाद राजा जनक की बातों से संतुष्ट हो शुक अपने पिता के पास लौट गया। व्यास मुनि ने शुक से पूछा—"बेटा, क्या राजा जनक ने तुम्हारे संदेह का निवारण किया?"

"पिताजी! मुझे जनक जैसा जीवन बिताने में कोई आपत्ति नहीं है।" शुक ने उत्तर दिया।

यह उत्तर सुनकर व्यास महर्षि अत्यंत आनंदित हुए। पीवरी नामक कन्या को लाकर उसके साथ शुक का विवाह किया। शुक ने निर्लिप्तता को त्यागे बिना पीवरी के साथ गृहस्थी चलाते हुए गौरप्रभु, देवव्रत, भरी और कृष्ण नामक चार पुत्र तथा इसके बाद कीर्ति नामक एक कन्या को पैदा किया। कीर्ति ने विभ्राज के पुत्र अणुहु नामक युवक के साथ विवाह करके ब्रह्मदत्त का जन्म दिया।

ब्रह्मदत्त राजा बनकर शासन करने लगे। एक बार नारद ने प्रवेश करके उन्हें बीजोपदेश दिया। इस पर ब्रह्मदत्त के भीतर ज्ञानोदय के साथ वैराग्य भी उत्पन्न हुआ। उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्र के हाथ सौंप दिया और वे बदरिकाश्रम में चले गये। शुक भी अपने पिता को छोड़ कैलास के शिखर पर गये। वहाँ पर थोड़े दिन ध्यान में बिताया तब उस शिखर पर से नीचे कूदकर सिद्धि प्राप्त की।

अपने पुत्र की मृत्यु पर व्यास अत्यंत दुखी हुए; वे कैलास में चले गये। सर्वत्र व्याप्त शुक ने प्रतिध्वनि के रूप में अपने पिता को उत्तर दिया।

शोकमग्न व्यास मुनि के पास शिवजी ने प्रवेश करके पूछा–"तुम्हारे पुत्र ने योगियों के लिए दुर्लभ मोक्ष की प्राप्ति की है। इसलिए ऐसे व्यक्ति के वास्ते शोक करना क्या तुम्हारे लिए उचित है?"

इस पर व्यास ने जवाब दिया–"अपने पुत्र को जब तक न देखूं तब तक मेरी आँखें शीतल न होंगी। मेरा मन उदास हो गया है।" व्यास ने कहा।

शिवजी ने भांप लिया कि व्यास का दुख कभी दूर होनेवाला नहीं है, तब उन्हें यह वरदान देकर चले गये–"व्यास! तुम्हारा पुत्र सदा छाया की भांति तुम्हारे साथ ही रहेगा।" तब व्यास मुनि अपने आश्रम को लौट आये।

शौनक आदि मुनियों ने शुक का वृत्तांत सुना, तब सूत मुनि से पूछा–"मुनिवर, इसके बाद व्यास ने क्या किया है?"

सूत महर्षि ने यों उत्तर दिया:

धृतराष्ट्र आदि का जन्म

व्यास महर्षि के शिष्य देवल, वैशम्पायन, जैमिनी, असित और सुमंत इसके पूर्व ही अपने गुरु से आज्ञा लेकर चले गये थे। अब शुक भी चले गये। तब व्यास को अपनी माता सत्यवती का स्मरण हो आया। तब वे आश्रम को छोड़ अपने जन्म स्थान पहुँचे। वहाँ पर निषाद आदि से मिलकर

अपनी माता का वृत्तांत पूछा। उन लोगों ने बताया कि राजा शंतनु सत्यवंती के साथ विवाह करके अपने साथ ले गये हैं।

इस पर व्यास ने समीप में ही सरस्वती नदी के तट पर आश्रम बनाया और तपस्या में लीन हो गये।

उधर शंतनु ने सत्यवती के द्वारा चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक पुत्रों का जन्म दिया, थोड़े दिन बाद वे मर गये। शंतनु के ज्येष्ट पुत्र भीष्म ने अपने पिता की अंत्येष्ठि की। पर अपने पिता के स्थान पर शासन करने की इच्छा न रखने के कारण चित्रांगद का राज्याभिषेक किया। चित्रांगद एक बार शिकार खेलने

जंगल में गये। तब अपने ही नाम के एक गंधर्व के साथ उनका संघर्ष हुआ। उस युद्ध में गंधर्व चित्रांगद ने भीष्म के छोटे भाई चित्रांगद का संहार किया।

इस पर भीष्म ने अपने छोटे भाई की अंत्येष्ठि क्रियाएँ संपन्न करके विचित्रवीर्य का राज्याभिषेक किया। इसे व्यास ने भी मान लिया। विचित्रवीर्य जब युक्त वयस्क हुए तब भीष्म उनका विवाह करने की बात सोचने लगे।

उन्हीं दिनों में काशी राजा ने अपनी पुत्रियों के स्वयंवर का प्रबंध किया और सभी राजाओं के पास निमंत्रण भेजें। भीष्म ने उस स्वयंवर में जाकर समस्त राजाओं को पराजित किया और काशी राजा की पुत्रियाँ अंबा, अंबिका और अंबालिका को अपने रथ पर बिठाकर घर ले आये। उन्हें अपनी माता को दिखाकर विचित्रवीर्य के साथ उन तीनों का विवाह करने के लिए मुहूर्त भी निश्चित किया।

उस समय अंबा नामक युवती ने लज्जा के मारे सिर झुकाकर भीष्म से कहा-"मैंने तथा साल्व ने परस्पर प्रेम किया है। आप तो अपनी शक्ति के बल पर मुझे यहाँ पर ले आये। आप के अधीन में आई मुझे क्या साल्व स्वीकार करेंगे?"

इस पर भीष्म ने अपनी माता, बुजुर्ग और मंत्रियों के साथ परामर्श करके अंबा को स्वेच्छापूर्वक भेज दिया। अंबा ने साल्व के पास जाकर कहा-"मैंने भीष्म को बताया कि मैं आप के साथ प्रेम करती हूँ, इस पर उन्होंने मुझे आप के पास भिजवा दिया है। इसलिए आप न्यायपूर्वक मेरे साथ विवाह कर लीजिए।"

साल्व ने बताया-"भीष्म ने तुम्हारा स्पर्श किया है। अगर कोई तुम्हें ले जाकर छोड़ देता है तो ऐसी युवती के साथ कौन विवाह करेगा? तुम जिस रास्ते से आई हो, उसी रास्ते से लौट जाओ।"

"उफ़! मैं तो न घर की रही और न घाट की।" यों विलाप करते अंबा भीष्म

के पास लौट आई और उनसे निवेदन किया—"साल्व राजा ने मुझे अस्वीकार किया है। अब मैं कहीं की नहीं रह गई। इसलिए आप मेरे साथ विवाह कर लीजिए।"

भीष्म ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया—"दूसरे के साथ प्यार करनेवाली युवती के साथ विवाह करना नहीं चाहिए। इसलिए तुम अपने पिता के पास लौट जाओ।"

इस पर अंबा अपने पिता के पास न जाकर जंगल में तपस्या करने चली गई। भीष्म ने बाक़ी दो काशी राजकुमारियों का विवाह विचित्रवीर्य के साथ किया। विचित्रवीर्य ने अपनी दो पत्नियों के साथ सुख भोगते नौ वर्ष राज्य किया और अंत में राजयक्ष्मा के शिकार हो मर गये।

अपने दूसरे पुत्र की भी मृत्यु पर दुखी हो सत्यवती ने भीष्म को एकांत में बुला भेजा और समझाया—"तुम भी तो राजा शंतनु के पुत्र हो। तुम मेरे वंश की रक्षा करो। अंबा और अंबिका के द्वारा तुम पुत्र पैदा करो, यह न्याय सम्मत ही होगा।"

"मैंने राज्य न करने और विवाह भी न करने की भी शपथ ली है। इसलिए उत्तम वंश के ब्राह्मण के द्वारा बच्चे पैदा कर वंश की रक्षा करना भी धर्म सम्मत है।" भीष्म ने समझाया।

भीष्म के मुंह से यह उत्तर पाकर सत्यवती ने व्यास का स्मरण किया। उसी समय व्यास वहाँ पर आ पहुँचे। भीष्म ने व्यास का सत्कार किया।

इस पर सत्यवती ने व्यास से कहा—"तुम अपने छोटे भाई की पत्नी के द्वारा पुत्र पैदा करके इस वंश का उद्धार करो।"

व्यास ने अपनी माता के आदेशानुसार अंबिका से एक पुत्र पैदा किया। मगर वह बच्चा अंधा था, इस कारण वह शासन करने की अर्हता नहीं रखता था। इसे देख सत्यवती ने अपनी दूसरी बहू अंबालिका के गर्भ से व्यास के द्वारा एक पुत्र का जन्म दिलाया, पर वह बच्चा

पांडुरोगी निकला। वह भी राज्य करने की योग्यता नहीं रखता था। इस पर सत्यवती ने अंबिका से एक और पुत्र को जन्म देने के लिए कहा। अंबिका अपनी सास की आज्ञा का विरोध न कर पाई, पर उसने गुप्त रूप से अपनी दासी को व्यास के पास भेजा। व्यास के द्वारा उस दासी के गर्भ से विदुर पैदा हो गया। वह भी व्यास जैसे महान व्यक्ति बना।

इस प्रकार भरतवंश की रक्षा करने के लिए व्यास के द्वारा धृतराष्ट्र, पांडुराजा तथा विदुर पैदा हुए।

मुनियों ने सूतमुनि से पूछा—"महानुभाव, सत्यवती और शंतनु का विवाह कैसे हो गया? वास्तव में इसके पूर्व ही उसके गर्भ से व्यास का जन्म कैसे हुआ? यह सारा वृत्तांत कृपया सविस्तार समझाइये।"

तब सूतमुनि ने यों सुनाया:

राजा उपरिचरवसु चेदी राज्य पर शासन करते थे। वे बड़े ही पराक्रमी थे। उन्होंने इन्द्र के प्रति घोर तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया और उनसे एक दिव्य विमान प्राप्त किया। वे सदा उस विमान पर आकाश में विचरण करते थे, इसी कारण वे "उपरिचर" कहलाये।

उपरिचरवसु की पत्नी गिरिका बड़ी सुंदर थी, उसकी परिचर्याएँ प्राप्त करते हुए सुखभोगों का अनुभव करते उन्होंने पांच शक्तिशाली पुत्रों का जन्म दिया और उन्हें पांच देशों के राजा बनाये।

एक बार गिरिका ऋतु स्नानकर पति से मिलने की प्रतीक्षा कर रही थी, तभी राजा वसु को अपने पिता ने बुलाकर आदेश दिया—"बेटा, तुम्हारे दादा का श्राद्ध करना है। तुम इसी वक़्त जाकर किसी जानवर का शिकार खेलकर ले आओ।"

राजा वसु पशोपेश में पड़ गया कि उसे अपनी पत्नी की इच्छा की पूर्ति करनी है या अपने पिता के आदेश का पालन करना है। अंत में अपने पिता के आदेशानुसार वे शिकार खेलने गये।

मगर उनका मन पत्नी पर लगा हुआ था। इस कारण एक ब्राह्मण के शाप की वजह से यमुना नदी में मछली के रूप में जीनेवाली अद्रिका नामक अप्सरा ने गर्भ धारण किया। यह वृत्तांत सुनकर मुनियों ने पुनः सूतमुनि की बातों को काटते हुए पूछा–"मुनिवर! अद्रिका को ब्राह्मण ने क्यों शाप दिया है?"

इस पर सूत मुनि ने यों समझाया:

एक बार एक ब्राह्मण यमुना नदी में उतरकर संध्यावंदन कर रहा था, तभी अद्रिका नामक अप्सरा यमुना में स्नान करने आई। पानी में उतरकर उस ब्राह्मण के समीप पहुँची और मज़ाक़ करने के ख्याल से उसके पैर पकड़कर खींचा।

इस पर ब्राह्मण ने नाराज़ होकर उसे शाप दिया कि तुम मछली बनकर पानी में पड़ी रहो। तब अद्रिका ने ब्राह्मण के पैर पकड़कर क्षमा मांगी और रो पड़ी। ब्राह्मण को इस पर दया आ गई। उसने समझाया–"थोड़े समय बाद तुम्हारे गर्भ से एक पुत्र और एक पुत्री पैदा होंगे। तब तुम्हें अपना वास्तविक रूप प्राप्त होगा।" यों शाप के विमोचन का मार्ग बताकर ब्राह्मण चला गया। उस दिन से अद्रिका यमुना नदी में मछली के रूप में जी रही थी।

अब वसु के कारण उस मछली ने गर्भ धारण किया, थोड़े दिन बाद एक मछुए के जाल में फँस गई। उसने मछली का पेट चीर दिया तो उसमें से एक बालक और एक बालिका निकल आये। मछुए ने उन बच्चों को ले जाकर राजा वसु को दिखाया। वसु विस्मय में आ गये। उन्होंने बालक को स्वीकार करके बालिका को उस मछुए के हाथ ही सौंप दिया। वह बालिका कालिका, मत्स्योदरी और मत्स्यगंधी नामक तीन नामों से मछुए के घर ही पलने लगी।

बालक मत्स्यु नाम से राजा उपरिचर वसु के यहाँ ही पलने लगा।

मछली के रूप से मुक्त होते ही वह शाप से मुक्त हो गई और अप्सरा के रूप में बदलकर अपने लोक को चली गई।

अधूरी प्रतिज्ञा

चतुरावर्त नामक नगर में एक धनवान था। उसका पुत्र सुदर्शन अपने पिता के मरने पर सब प्रकार की बुरी लतों का शिकार हो गया है। अपनी जमीन-जायदाद खो बैठा, साथ ही मित्रों जैसे कपट नाटक रचनेवाले मित्र भी उससे दूर भाग गये। आख़िर वह अपनी पत्नी के साथ उस गाँव को छोड़कर चल पड़ा। इसे देख उसके पुराने मित्रों ने उसका मजाक़ उड़ाया।

इस पर सुदर्शन ने प्रतिज्ञा की—"मैं फिर से धनवान बनकर तुम सब को मेरे चारों तरफ़ दुम हिलानेवाले कुत्तों जैसे न बना पाया तो मैं मृत व्यक्ति के समान माना जाऊँगा।"

इसके बाद दूसरे गाँव में उसने व्यापार करके पहले से भी दुगुना धन कमाया। तब वह अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने के लिए चतुरावर्त की ओर चल पड़ा।

रास्ते में पति-पत्नी ने एक सराय में पड़ाव डाला। उस दिन रात को सराय के चबूतरे पर कुछ लोग जुआ खेल रहे थे। सुदर्शन भी वहाँ पहुँचा। जुआ खेलते सवेरे तक वह अपना सारा धन खो बैठा। सवेरा होने पर जब वह लौटने की तैयारी करने लगा, तब उसकी पत्नी ने पूछा—"अब आप की प्रतिज्ञा की बात क्या होगी?"

"मैंने कहा था कि अगर मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरा न कर सकूँगा तो मृत व्यक्ति के समान ही माना जाऊँगा, ऐसा ही होने दो। क्योंकि शराबखोर और जुआखोर सुदर्शन कभी का मर गया है!" सुदर्शन ने जवाब दिया।

प्याज के डंटल

ऊर्मिला स्वभाव से भोली भाली और सरल है। उसकी शादी छोटी सी नौकरी करनेवाले चिरंजीवी के साथ हुई। चिरंजीवी बचपन से ही क्रोधी स्वभाव का है। सहनशीलता नाम मात्र के लिए भी उसकी प्रकृति में नहीं है।

ससुराल में आने पर ऊर्मिला अपने पति के स्वभाव से घबड़ाने लगी। डर के कारण उस के पति की बातें उस के दिमाग में घुसती न थीं। इस वज़ह से पति का हर काम वह जल्दी-जल्दी करके मार खाती रही।

एक दिन चिरंजीवी ने प्याज के डंटल लाकर अपनी पत्नी से कहा—"तुम प्याज की सब्जी और पत्तों से खट्टा बनाओ। मैं मंदिर तक हो आता हूँ।"

पति की बातें सुनते ही ऊर्मिला घबड़ा गई। उसने केवल सब्जी और खट्टे की बातें मात्र सुनीं। उस ने उलटे बनाया और पति का इंतज़ार करने लगी।

बड़ी रात गये चिरंजीवी घर लौटा और अपनी पत्नी से पूछा—"तुमने मेरे कहे मुताबिक़ सब्जी व खट्टा बनाया है न?"

"जी हाँ! प्याज का खट्टा और पत्तों की सब्जी बनाई है।" ऊर्मिला ने झट से जवाब दिया।

यह जवाब सुनकर चिरंजीवी आग बबूला हो उठा। किवाड़ बंद कर आया और गरज कर बोला—"जब देखो, तुम कुछ उल्टी ही करती हो। पीटने पर ही तुम्हारी अक़्ल ठिकाने लगती है।" यों कहते चिरंजीवी ने ऊर्मिला की पीठ पर चार मुक्के जमा दिये।

ऊर्मिला दीवार से सट कर रोते बैठ गई। इतने में अटारी के ऊपर से कोई धम्म से नीचे कूद पड़ा। वह एक चोर था। अंधेरा

गोविंद सहाय

होने से पहले ही वह घर के भीतर घुस आया था और मौक़े का इंतज़ार करते वह अटारी पर बैठा हुआ था। उसकी काली आकृति, झाबेदार मूंछें और हाथ में पैनी छुरी देख चिरंजीवी के प्राण सूख गये। उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि क्या किया जाय। वह इधर-उधर घबराई दृष्टि से ताकने लगा।

चोर ने चिरंजीवी के कंठ पर छुरी टिका कर कर्कश स्वर में पूछा–"अबे, काठ की तरह खड़े क्यों हो? घर के गहने-रुपये पोटली बांध कर लेते आओ।"

चिरंजीवी ने थर-थर काँपते हुए उत्तर दिया–"गले पर से छुरी हटाओ। मैं हिल-डुल नहीं पाता हूँ।"

इसके बाद जब चोर ने उसका अनुसरण किया तो संदूक़ के पास जाकर गहने-रुपये निकाले और पोटली बांधकर चोर के हाथ दे दिये।

चोर ने उस पोटली को अपनी बगल में दबाया तब चिरंजीवी से कहा–"सुनो, प्याज का खट्टा और पत्तों की सब्जी कहाँ? जल्दी अपनी पत्नी से कहो कि वह मुझे परोसे। खाने की बड़ी इच्छा है।"

चिरंजीवी ने पत्नी को डांटा–"देखती क्या हो? जल्दी चोर को खाना परोसो।"

ऊर्मिला ने चोर के आगे थाली परोस दी। चोर जब खाना खाने लगा तब चिरंजीवी पंखा झलते चोर के पास बैठा रहा।

"वाह, बढ़िया तरकारी है! अद्भुत है!" इन शब्दों के साथ चोर ने थाली साफ़ कर दी। तब ठहाके मारकर हँसते हुए चिरंजीवी से बोला–"अबे, तुम भी कोई आदमी हो? इतनी सुंदर रसोई बनानेवाली पत्नी को तुम पीटते हो? सारा घर लूटनेवाले मुझे पंखा झलते हुए बैठे रहे?"

चिरंजीवी को लगा कि उसका सर सरे आम काट दिया गया है। वह लज्जा से भर उठा। चोर ने चिरंजीवी की आँखों में देखते हुए कहा–"जानते हो, मैं कैसे और क्यों चोर बन गया?"

चिरंजीवी ने इस प्रकार नकारात्मक सर हिलाया जिसका अर्थ था कि मैं उस बाबत कुछ भी नहीं जानता।

चोर ने ही कहना शुरू किया–"मेरे बाबा शराबखोर हैं। वे हमेशा मेरी माँ को पीटा करते थे। मेरी माँ मजदूरी करके, पैसे बचाकर मुझे पढ़ाया करती थीं। मेरे बाबूजी मेरी माँ को पीटकर बचे-खुचे पैसे भी शराब पीने के लिए ले जाया करते थे। मेरी माँ मार खा-खाकर जल्द ही मर गईं। मैं अब उस घर में रह न पाया। पढ़ा-लिखा न था। मेहनत करके कमाने की भी उम्र न थी वह। लाचार होकर मैं चोर बन बैठा। पति-पत्नी परस्पर प्यार करते हुए गृहस्थी चलाते रहे तो उस परिवार के बच्चों की हालत मेरी हालत जैसी न होगी। जैसे प्याज और उसके पत्तों का स्वाद व गंध दोनों एक ही प्रकार की होती है, वैसे ही पति-पत्नी के भीतर भी एक ही प्रकार के विचार होने चाहिए। आज से ही सही, तुम अपनी करनी पर पश्चात्ताप करके अपनी पत्नी के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करो।" यों समझाकर चोर उठ खड़ा हुआ। अपनी बगल में दबी गहनों की पोटली ऊर्मिला के हाथ देकर चला गया।

इसके बाद चिरंजीवी ने फिर कभी अपनी पत्नी को नहीं पीटा। ऊर्मिला भी अपने पति को देख घबड़ाती न थी।

गोदामों का रहस्य

एक दिन राजा कृष्णदेवराय से महा मंत्री तिम्मरुसु ने बताया कि वे हथियारों के गोदामों की जगह बदल रहे हैं। इस पर राजा ने पूछा–"महा मंत्री! ऐसी ज़रूरत क्या आ पड़ी है?" तब महा मंत्री ने यों जवाब दिया :

"हमारी सेना के गुप्त गोदामों के प्रधान अधिकारी के यहाँ काम करनेवाला प्रमुख कर्मचारी का देहांत हो गया है। मुझे मालूम हुआ है कि उसके दोनों पुत्र धन पानी की तरह बहा रहे हैं। मृत व्यक्ति का अपनी ईमानदारी की कमाई में से इतना सारा धन बचाकर रखना संभव नहीं है उसने हमारे गोदामों के रहस्य बहमनी सुलतानों से धन लेकर बताया होगा।" "यह तो केवल आप की शंका ही है न?" राजा ने पूछा।

"यह शंका नहीं, महाराज! सत्य है। मैंने इधर बहमनी सुलतानों को उन गोदामों के रहस्य बेचने का प्रलोभन दिखाकर देखा। पर उन लोगों ने उन रहस्यों को जानने की कोई जिज्ञासा नहीं दिखाई। इसका मतलब है कि उन्हें उन रहस्यों का पता चल गया है। मृत कर्मचारी देशद्रोही है।" महा मंत्री ने उत्तर दिया।

इसके बाद तुरंत राजा ने गोदामों के स्थान बदलने की अनुमति दे दी।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां मई १९७९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

S. G. Seshagiri

★

Mohan D. Desai

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ मार्च १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जनवरी के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : धरती में सोना उगाये !

द्वितीय फोटो : सोना घर में खुशियाँ लाये ! !

प्रेषक : रमेशचन्द्र ईडीवाल, ग्राम व पोस्ट : मांगलियावास, जिला : अजमेर (राज)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.

NP 007 बबल गम

मुफ़्त

यदि तुम्हारे 007 के पैकेट में सफेद रंग का बबल गम हो तो तुरंत ही अपने दुकानदार से एक और 007 बबल गम मुफ़्त में हासिल करो.

खेलकूद के विजेता और पढ़ाई में भी सबसे आगे! ये जानते हैं कि सिर्फ़ NP, 007 बबल गम से ही सबसे अच्छे और सबसे बड़े बबल बनते हैं—क्योंकि इनमें भरी है—'बबल शक्ति'!

तुम भी NP 007 बबल गम से बबल चॅम्पियन बन सकते हो.

बड़े-बड़े और अच्छे बबल बनाने का मज़ा लूटो, ये मज़ा सिर्फ़ NP 007 बबल गम से ही आयेगा. इस लाजवाब बबल गम के बनानेवाले हैं—जाने-माने मशहूर NP—एकमात्र बबल गम निर्माता, जिन्होंने आइ एस आइ का निशान हासिल किया है.

NP बबल गम यानी 'बबल शक्ति'

शाबाश!

Dattram-NP-15 HIN

दि नॅशनल प्रॉडक्ट्स, बंगलूर.

राजू और मुखौटा

मीना का जन्मदिन था. राजू के लिए यह खुशी का मौका था. नंदू, विनय, रेखा, अशोक सभी बच्चे शानदार तोहफे लाने वाले थे.

राजू की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या दे. वह कोई खास चीज़ देना चाहता था, जो सबसे अलग नज़र आये.

उसने बहुत देर तक इस बारे में सोचा. अचानक उसके दिमाग में एक बात आई.

उसने सोचा— क्यों न एक अच्छा सा मुखौटा बना कर दिया जाए? जिसकी टोपी में हरी पट्टियाँ हों, गालों पर गुलाबी रंग और लाल-लाल होंठ.

उसने जल्दी-जल्दी में गत्ते का एक टुकड़ा लिया और ब्रश से उस पर तेज़ हाथ चलाये. फिर क्या था— मुखौटा तैयार हो गया. उसने उसे काटकर रख लिया.

मीना ने जब उस रंग-बिरंगे तोहफे को देखा, तो वह खुशी से नाच उठी. हर कोई राजू और उसके तोहफे की तारीफ़ कर रहा था. अगर राजू रंगने का काम कर सकता है तो तुम क्यों नहीं?

वॉटर कलर्स और पोस्टर कलर्स

कॅम्लिन प्रायव्हेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिविजन,
बम्बई-४०० ०५९.

कॅम्लिन अनमेकेबल पेन्सिल बनानेवालों की ओर से

VISION 791 HIN

ज़िन्दगी की सुहानी चीज़ों की तरह
हमेशा ताज़ा, हमेशा सजीव!
Pond's
Dreamflower talc
पॉण्ड्स
ड्रीमफ़्लावर
टाल्क
जिसकी सुगंध आपको हमेशा से पसन्द है
Pond's
CP-1829